लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक-२६३
सम्पादक एवं नियामक :
लक्ष्मीचन्द्र जैन



Lokodaya Series : Title No. 263
SHUTURMURG
(Play)
Gyandeva Agnihotri
Bharatiya Jnanpith
Publication
First Edition 1968
Price Rs. 2.50



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
प्रधान कार्यालय
९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
प्रकाशन कार्यालय
दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-५
विक्रय-केन्द्र
३६२०।२१, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
प्रथम संस्करण १९६८
मूल्य २.५०

सन्मति मुद्रणालय,
वाराणसी-५

श्यामानन्द जालान
के नाम

शुतुरमुर्गकी मंच-प्रस्तुति : प्रतिक्रियाएँ

हिन्दी रंगमंचमें ऐसा बहुत कम हो पाता है कि कोई नयी नाट्य कृति पहले मंचकी कसौटीपर कसी जाये, नाटककारको प्रस्तुतीकरणका अभिन्न अंग बनाया जाये; मूल रचनाको जांचने-परखने और अपेक्षित परिवर्तन करनेका अवसर मिले और फिर उसे प्रकाशित किया जाये। हर्ष है कि यह सुखद संयोग 'शुतुरमुर्ग' को मिला।

प्रकाशनके पूर्व ही कलकत्तेकी प्रसिद्ध संस्था 'अनामिका' ने श्यामानन्द जालानके निर्देशनमें कलकत्ता और दिल्लीमें 'शुतुरमुर्ग' के बारह प्रदर्शन किये। बम्बईकी प्रसिद्ध संस्था 'थियेटर यूनिट' ने सत्यदेव दुबेके निर्देशनमें 'शुतुरमुर्ग' के लगभग दस प्रदर्शन किये। अब इन प्रदर्शनोंकी प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया मेरे सामने है। और उस प्रतिक्रियाने जिन प्रश्नोंको उभारा उनके उत्तरोंकी खोज मुझे सार्थक लगती है।

सबसे अधिक विवाद 'शुतुरमुर्ग' की मूल परिभाषाको लेकर हुआ। यह कहा और लिखा गया कि नाटकके शीर्षकका नाटककी कथावस्तुसे कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि मुख्य पात्र 'राजा' को 'शुतुरमुर्ग' मान भी लें तो भी नाटकके

मानवीय कार्य व्यापारको देखते हुए बात सटीक बैठती नहीं। बात सटीक बैठ भी नहीं सकती, क्योंकि मेरे नाटकका 'राजा' 'शुतुरव्यवहार' से पीड़ित नहीं है। वह स्वयं शुतुरमुर्ग़ नहीं है, पर मानव-स्वभावमें दूर तक धँसी शुतुरमुर्ग़ी प्रवृत्तिका उसे पूर्ण ज्ञान है। इसी ज्ञानको वह अपने स्वार्थोंके लिए मोड़ लेता है। तभी तो वह अपने आपको सचेतन शुतुरमुर्ग़ कहता है और अपनी शक्ति एवं सत्ताको सुरक्षित रखनेके लिए सोनेकी 'शुतुर-प्रतिमा' के निर्माण और उसपर स्वर्णछत्रकी स्थापनाके 'महान्' कार्यमें जुट जाता है। देशकी समस्याओंसे राजा पलायन नहीं करता, बल्कि उनका सामना करता है—समाधान ढूँढ़ता है, फिर यह समाधान कुछ भी क्यों न हो। सोनेके शुतुरमुर्ग़का निर्माण और उसपर स्वर्ण-प्रतिमाकी स्थापना उसका सबसे बड़ा शस्त्र है—जिसे वह लगभग सभी समस्याओंके समाधानमें लगाता है। और यह शस्त्र उसे मानव-स्वभावमें व्याप्त 'शुतुरमुर्ग़ी' प्रवृत्तियोंसे मिला है। इसी महान् शस्त्रसे वह अपनी शक्ति और सत्ताको सुरक्षित रखता है। फिर भी अन्तमें उसका विघटन होता है, पर उसका यह विघटन त्रासद नहीं है। अनामिकाके प्रस्तुती-करणमें मुझे यह एक बड़ा दोष लगा। मेरे नाटकका 'राजा' त्रासद नहीं, चतुर और कुटिल है। इसीलिए 'शुतुरमुर्ग़' की जो व्याख्या निर्देशक श्यामानन्द जालानने की—वह मेरे नाटककी व्याख्या नहीं है। यह बात दूसरी है कि उन्होंने जो भी व्याख्या की उसे अन्त तक क़ायम रखा और वह भी अपूर्व सफलताके साथ। अनामिकाने जिस विशेष भाव-भंगिमाओं-की शैलीमें नाटक प्रस्तुत किया, उससे सहमत और असहमत हुआ जा सकता है, पर उसके नाटकीय प्रभाव और सफलतासे इनकार नहीं किया जा सकता। प्रदर्शन अत्यन्त सफल थे।

मुझे ऐसा लगता है कि सत्यदेव दुबेकी व्याख्या मेरे नाटकके अधिक निकट पड़ती है। पर अन्तमें उन्होंने लगभग एक दुर्घटना ही कर डाली। चरमोत्कर्षमें जब राजा (सूत्रधार) यह स्वीकार करता है कि सब कुछ

इसे मालूम था, तब प्रेक्षकोंमें-से एक व्यक्ति उठकर पिस्तौलसे राजाको हत्या कर देता है (यहाँ तक सहमत हुआ जा सकता है। कभी-कभी जो अनकहा होता है—वही अपेक्षित प्रभाव है। यह निश्चित अन्तका आरम्भ संकेतित करता है)। हत्याके पहले चारों मन्त्रियोंने क्रमशः जॉनसन, माओ, स्टालिन, और सी० पी० आई० के मुखौटे पहन रखे हैं, और राजाकी मृत्युके साथ ही पृष्ठभूमिसे 'वन्देमातरम्'का समवेत स्वर उभरता है। इस अन्तका नाटकको कथावस्तुसे कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं। निर्देशक सत्यदेव दुबे इसे स्वीकार भी करते हैं, पर वे दर्शकोंको सुखका भाव देकर घर भेजनेके पक्षमें नहीं; अस्तु यह 'टीजर'।

'अनामिका'की 'स्टाइलाइज्ड' शैली और 'थियेटर यूनिट'की 'रियलिस्टिक' शैलीने यह समस्या—सम्भावना उत्पन्न की है कि प्रस्तुतीकरणकी कौन-सी शैली 'शुतुरमुर्ग'को अधिक प्रभावोत्पादक, नाटकीय और समग्र रुचि सम्प्रेषण देती है। पर यह प्रश्न निर्देशकोंसे सम्बन्धित है जो अपनी-अपनी क्षमताओंके अनुसार नाटकको रंग, रूप और आकार देंगे।

नाट्य आलोचकोंके एक वर्गका कथन था कि 'शुतुरमुर्ग' मात्र एक साहित्यिक नाटक है। एक दूसरे वर्गके अनुसार वह एक रंगमंचीय नाटक है। पर सच तो यह है कि नाट्य कृतिकी श्रेष्ठताका मूल्यांकन रंगमंचीय और साहित्यिक दृष्टिसे अलग-अलग नहीं हो सकता और न यह दोनों एक दूसरेपर आधारित हैं। वास्तविकता तो यह है कि एकका अस्तित्व ही दूसरेके कारण है। एक है, इसीलिए दूसरा है।

'शुतुरमुर्ग'के शिल्पके बारेमें एक मजेदार बात और सामने आयी। कुछ आलोचकोंने यह कहा और लिखा कि 'शुतुरमुर्ग'में परम्परागत नाट्य रूढ़ियोंसे ख्वामखाह विद्रोह किया गया है। कुछने कहा कि 'इल्यूजन', 'फार्स' और यथार्थवादी शैलियोंका अजीब मिश्रण किया गया है। और कुछने यहाँ तक कि सारा शिल्प नाटकके कथ्यपर आरोपित है। ऐसे विद्वान् आलोचकोंसे मुझे सिर्फ यही कहना है कि 'शुतुरमुर्ग'में

जो शिल्प मैंने चुना है उसका उद्देश्य अकारण ही वर्तमान और परम्परागत नाट्य रूढ़ियोंको तोड़ना नहीं था और न ही उनका अन्धानुसरण था। 'शुतुरमुर्ग़'के कथ्यको मैं केवल उसी शिल्पमें कह सकता या जिसमें मैंने कहा है। क्योंकि इस नाटकके कथ्यसे ही शिल्पका जन्म हुआ है। एक अन्तिम वर्ग आलोचकोंका और है जिसके अनुसार 'शुतुरमुर्ग़'के शिल्प और कथ्यने हिन्दी और भारतीय रंगमंचमें एक नयी नाट्य परम्परा स्थापित की है और प्रस्तुतीकरणकी नयी-नयी शैलियोंको संकेतित किया है। यदि इस कथनको सच माना जाये, तो यह मात्र एक संयोग है, अधिकसे अधिक एक सुखद संयोग।

— ज्ञानदेव अग्निहोत्री

दुर्गाअष्टमी '६८
८/७७, आर्यनगर, कानपुर

शुतुरमुर्ग़

शुतुरमुर्ग

राजा
रानी
रक्षामन्त्री
भाषणमन्त्री
महामन्त्री
विरोधीलाल
मामूलीराम
दासी
मरता हुआ मनुष्य

शुतुरमुर्ग

[रंगशालाकी बत्तियाँ बुझते ही प्रकाशका केन्द्रित वृत्त मुख्य यवनिकाके सामने पड़ता है। सूत्रधार मंचपर आता है। वह काले रंगका दुशाला ओढ़े है।]

सूत्रधार : [दर्शकोंसे] नमस्कार और स्वागत। मेरा नाम सूत्रधार है लेकिन मैं कुछ दूसरे प्रकारका सूत्रधार हूँ। दरअसल मैं अपने ही जीवनका सूत्रधार हूँ। मैंने स्वयं ही अपने जीवनकी यवनिका उठायी, स्वयं ही मुख्य पात्रका अभिनय किया और अपने ही कौतुक सृजनका प्रेक्षक रहा। मैंने स्वयं अपने लिए घटनाओं और स्थितियोंका निर्माण किया। वक़्तकी दीवारपर मैंने अपनी, सिर्फ़ अपनी परछाईं टाँगनेका प्रयास किया। भावनाओं और संवेगोंके ज्वार-भाटे मैंने ही उठाये और उनकी उत्तुंग तरंगोंपर खुद ही सवारी की। मैं स्वयं ही अपना सर्वनियामक, अपना स्रष्टा हूँ [क्षणिक विराम] या यूँ कहिए कि था। लीजिए, मैं तो अपने जीवनका नाटक प्रस्तुत करने लगा। तनिक ठहर जाइए, मैं अपना वह परिवेश धारण कर लूँ जिसे मैं अन्तिम बार धारण किये था। [काला दुशाला हटाता है, अन्दरसे राजसी परिधान चमकने लगते हैं] और वह सोनेका शुतुरमुर्ग जो मेरा राज्य-चिह्न था। [पहनता है]

शुतुरमुर्ग़—आह ! कितना प्यारा पक्षी है। जब नग्न सत्य उसे चारों ओरसे घेर लेते हैं और वह भाग नहीं पाता तो आँखों समेत वह अपनी चोंच रेतमें डुबो देता है और पलायनकी उस सम्पूर्ण अनुभूतिमें यह कल्पना करता है कि उसे कोई नहीं देख रहा है—उसे कोई नहीं समझ रहा है—उसे कोई नहीं जान रहा है और वह सुरक्षित है। लेकिन सचेतन शुतुरमुर्ग़ अच्छी तरह जानता है कि उसे सब देख रहे हैं, सब समझ रहे हैं, सब जान रहे हैं और वह सुरक्षित नहीं है। ऐसा ही एक नाटक मेरी शुतुरनगरीमें खेला गया। अब तो आप समझ गये होंगे कि मैं एक राजा हूँ। सच ही मैं एक राजा हूँ और अब मैं आपका आवाहन करता हूँ कि आप मेरे साथ-साथ, मेरे अनुभवोंके मध्यसे होकर यात्रा करें। हाँ—एक बात मैं आपको याद दिलाता हूँ कि यह सब महज़ एक नाटक है—क्योंकि इस मंचपर प्रस्तुत होनेवाली चीज़ ज़िन्दगी नहीं हो सकती। वह तो, सिर्फ़ नाटक हो सकता है। ज़िन्दगीका नाटक, ज़िन्दगी लगनेवाला और ज़िन्दगीसे पैदा होनेवाला नाटक। लीजिए मैं तो बहकने लगा। हाँ, अब मैं, मैं नहीं रहा। राजा हो गया हूँ न। इसलिए अब मेरा मैं 'हम' हो गया। [अचानक बिल्कुल राजाकी तरह] हम, हम, हम, शुतुरनगरीके सर्व नियामक, राजाओंके राजा, महाराजा [क्षणिक विराम] लेकिन हमारा राजमहल कहाँ है ? हमारा राजमहल ?

[मुख्य यवनिका तुरन्त हट जाती है और मंचपर प्रकाश आ जाता है। शुतुरनगरीके राजकीय महलका एक कक्ष

दिखता है। ऊपरकी ओर ठीक बीचोबीच एक श्वेत सिंहासनको जाती आयताकार सीढ़ियाँ। सिंहासनमें छत्र-के स्थानपर शुतुरमुर्गकी चोंच। राजा शानसे आकर सिंहासनपर बैठता है। उसके हाथकी लकड़ी राज्य-दण्ड है। बगलमें एक मधुर आवाजका घण्टा लगा है। राजा उसे बजाता है। तुरन्त ही मंचपर पूर्ण प्रकाश आ जाता है। राजा मुँहपर वस्त्र रखकर मज़ेसे खर्राटें भरने लगता है। सारा वातावरण मंगलवाद्योंसे गूँजने लगता है। दर्शकोंकी तरफ़से देखे जानेपर ऊपरी मंचकी बायीं ओरसे रानी, दासी, मापणमन्त्री और महामन्त्री आते हैं। ये सब एक छोटे-से जुलूसमें हैं। मंगलवाद्य बजते जाते हैं। नेपथ्यमें 'महाराजकी जय हो' के नारे लगते हैं। दासीके हाथमें एक थाल है जिसमें चन्दन, रोली इत्यादि हैं। जुलूस धीरे-धीरे सिंहासनके नीचे आकर सादर खड़ा होता है। राजाको खुर्राटें लेता देखकर सब पात्र एक दूसरेके मुँहकी ओर देखते हैं। अन्तमें मापण-मन्त्री साहस करके आगे बढ़ता है]

भापणमन्त्री : महाराज ! हम आपका अभिनन्दन करने आये हैं।

राजा : अभिनन्दन ?

भापणमन्त्री : हाँ महाराज ! शुतुरमुर्ग़की स्थापनाका कार्य अब अपने बीसवें वर्षमें है।

राजा : [सुखद आश्चर्य] भापणमन्त्री !

भापणमन्त्री : इस बीसवीं वर्ष गांठपर हमारा हार्दिक अभिनन्दन स्वीकार कीजिए।

राजा : [भावुकतासे] भापणमन्त्री ! इतनी ऐतिहासिक घटना और हम भूले जा रहे थे। बीस वर्ष ! लम्बे बीस वर्ष बीत गये और हमें ऐसा लगता है कि अभी यह कलकी बात है। कितना महान् था वह क्षण जब पहली बार हमारे मस्तिष्कमें शुतुरमुर्ग़की प्रतिमा स्थापित करनेकी बात आयी थी। आह ! विचार कितनी महान् और तीव्र क्रान्ति करते हैं। शुतुरमुर्ग़की स्थापनाका महान् विचार कैसे दावानलकी तरह सारे देशमें फैल गया। कैसे उसके लिए धन जुटा कैसे महान् प्रतिभाएँ : महान् वास्तुशिल्पी और श्रमकार, वह सब तो अब इतिहास हो चुका है। रह गया है इस सामूहिक सृजन-भावनाका एक अद्वितीय प्रतीक जो शुतुरनगरीके अन्दर कहीं धीरे-धीरे ऊँचा उठता जा रहा है। आह ! मेरा सोनेका शुतुरमुर्ग़ एक दिन विशालकाय रूप धारण कर लेगा। इतिहास-पुरुषकी तरह उसका महाकाय, मांसल व्यक्तित्व आकाशगंगा तक ऊँचा उठ जायेगा। वही—वही होगा मेरे जीवनकी सम्पूर्ण सार्थकताका क्षण।

भापणमन्त्री : [सोल्लास] शुतुरमुर्ग़की—

सब लोग : जय हो !

भापणमन्त्री : शुतुरमुर्ग़की—

सब लोग : जय हो !

भाषणमन्त्री : महाराज, अब हम आपका अभिनन्दन करना चाहेंगे ।

[राजा सिर झुका देता है—रानी मुसकराते हुए राजाके तिलक लगाती है—पृष्ठभूमिसे मंगलवाद्य]

राजा : हम आप सबके बड़े आभारी हैं कि आपने हमारा सम्मान किया; वैसे अभिनन्दन कृतिकारका नहीं कृतित्वका होना चाहिए ।

भाषणमन्त्री : महाराज, आपमें तो दोनोंका समन्वय है । अब मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप राष्ट्रके नाम सन्देश प्रसारित करें ।

राजा : [खड़ा होकर] समयोचित बात कही है आपने । [क्षणिक विराम] शुतुरमुर्गका दर्शन राष्ट्रका परम सत्य बने और उसका आचरण, राष्ट्रीय आचरण संहिता, यही हमारा सन्देश है ।

[राजा एक हाथ ऊँचा करके खड़ा हो जाता है, रानी आरती उतारती है । तभी पृष्ठभूमिसे क्रोधित भीड़का शोर उभरता है । भीड़ नारे भी लगा रही है—'राजा मुरदाबाद', 'शुतुरमुर्गका नाश हो' । राजा तथा मन्त्रिगण स्तम्भित रह जाते हैं]

राजा : [सक्रोध] भाषणमन्त्री, हम यह क्या सुन रहे हैं ।

भाषणमन्त्री : महाराज, अगर आज्ञा हो तो पता लगाकर बताऊँ ।

राजा : आज्ञा है ।

[भाषणमन्त्रीका तेजीसे प्रस्थान]

रानी : महाराज, मुझे तो ऐसा लग रहा है कि राज्यके नागरिक आपका अभिनन्दन करने आये हैं ।

राजा : महारानी, क्योंकि कम्पनसे ही हमें सत्यका आभास हो

जाता है और हम कह सकते हैं कि यह स्वर अभिनन्दनके नहीं हैं।

दासी !

दासी : महाराज !

राजा : रक्षामन्त्रीको भेजो।

दासी : जो आज्ञा।

[दासीका प्रस्थान]

राजा : महारानी, हमें एकान्त चाहिए।

[रानी सिर झुकाकर चली जाती है]

राजा : महामन्त्री !

महामन्त्री : महाराज !

राजा : अभी राजमहलके बाहरकी हवामें तैरते हुए जो स्वर आये उनके बारेमें आपका क्या मत है ?

महामन्त्री : महाराज, वे सब प्रगतिके स्वर हैं।

राजा : क्या मतलब ?

महामन्त्री : मतलब यह कि क्रियाओंका जो जाल आपने रचा है, यह सब उसकी प्रतिक्रियाएं हैं।

राजा : [गम्भीरतासे] क्रियाओंकी प्रतिक्रिया।

[मापणमन्त्रीका तेज़ीसे प्रवेश]

मापणमन्त्री : [घबराया हुआ] महाराज···महाराज···राजमहलके बाहर उत्तेजित समूह खड़ा है। वे लोग नारे लगा रहे हैं और शुतुरमुर्गको विध्वंस करनेकी धमकी दे रहे हैं।

राजा : मापणमन्त्री, हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि हमारे मन्त्रिगण ठीक कार्य नहीं कर रहे हैं।

महामन्त्री : मेरे विचारसे ये विरोधी तत्त्व ठीक कार्य नहीं कर पा रहे

हैं। इनकी अपनी सीमाएँ हैं। वह बात दूसरी है कि इन्हें हमारी सीमाओंका ज्ञान न हो।

आपणमन्त्री : फिर हमारी चुस्ती और मुस्तैदी भी कुछ कम नहीं; गत वर्षकी राजाज्ञाके बादसे तो हम समूहोंको भीड़में बदलनेका कार्य भी सफलताके साथ करने लगे हैं।

राजा : वह तो ठीक है लेकिन राजमहलके सामने खड़ा हुआ यह समूह—इसका अन्त क्यों नहीं हुआ ?

आपणमन्त्री : महाराज हमारे प्रयासमें कोई ढील नहीं, लेकिन बुरा हो उस विरोधीलालका। इधर हमने समूहोंको भीड़में बदला और उधर उसने भीड़को फिर समूहमें बदल दिया। महाराज, अद्भुत तेज है इस विरोधीलालकी वाणीमें।

राजा : विरोधीलाल ! ऐसा लगता है यह नाम पहले भी कभी सुना है।

महामन्त्री : सुना भी होगा, महाराज ! राजनैतिक व्याकरण पढ़ते समय यह नाम प्रायः आता है।

राजा : [आपणमन्त्रीसे] विरोधीलालका पूरा परिचय ?

आपणमन्त्री : वह इन बचे-खुचे समूहोंका नेता है महाराज, और आपकी नीतियोंका घोर शत्रु।

राजा : [साश्चर्य] हमारी नीतियोंका घोर शत्रु ? महामन्त्री, धुन्धनगरीके सबसे बड़े सत्यवादीकी हैसियतसे बतलाइए—क्या हमारी कोई नीतियाँ हैं ?

महामन्त्री : धुन्धनगरीके एकमात्र सत्यवादीकी हैसियतसे मैं जो कुछ कहूँगा, सच कहूँगा, पूरा सच कहूँगा और सचके सिवा कुछ न कहूँगा। महाराजकी सिर्फ़ एक नीति है (विराम) कि उनकी कोई नीति नहीं।

राजा : [उत्तेजित] सुन लिया आपने भाषणमन्त्री ! आश्चर्य है कि जो बात हमारी शुतुरनगरीमें सबको मालूम है, वह इस विरोधीलालको नहीं मालूम। अब प्रश्न यह है कि वह हमारा व्यक्तिगत शत्रु क्यों है ? आखिर वह क्या चाहता है ? क्या कहता है ?

भाषणमन्त्री : महाराज, वह कहता है कि देशका सारा धन, सारी प्रतिभा, सारे उपकरण महज एक शुतुरमुर्गकी प्रतिमा बनानेमें लगाये जा रहे हैं—

राजा : और········

भाषणमन्त्री : देशमें ग़रीबी है, लोग भूखों मर रहे हैं, तन ढँकनेको कपड़ा नहीं, रहनेको मकान नहीं···

राजा : और······

भाषणमन्त्री : राजमहलकी ईंटसे ईंट बजा देंगे, और क्षमा कीजिएगा महाराज, राजाकी दाढ़ी-मूँछ काट लेंगे।

राजा : [मुसकराकर] कितना मूर्ख है यह विरोधीलाल। क्या उसे यह भी नहीं मालूम कि हम दाढ़ी-मूँछ नहीं रखते।

[रक्षामन्त्रीका प्रवेश]

रक्षामन्त्री : महाराजकी जय हो !

राजा : क्या समाचार है रक्षामन्त्री ?

रक्षामन्त्री : राजमहलके सामने प्रदर्शन हो रहा है महाराज, उग्र प्रदर्शन।

राजा : सुरक्षा प्रबन्ध कैसे हैं ?

रक्षामन्त्री : एक दम उच्चस्तरके; शुतुरनगरीके कोने-कोनेमें सुरक्षा सैनिक नियुक्त हैं। हर दिशामें गुप्तचरोंका दल घूम रहा है। सभी अधिकारियों और सैनिकोंको कवच बाँट दिये गये हैं। इन कवचोंपर आग, पानी, कंकड़ पत्थरके साथ-साथ नारे और गालियोंका भी कोई असर नहीं होगा।

अब रहा राजमहल। सो उसकी सुरक्षाका मैंने एक नया ढंग निकाल लिया है।

[कौतुकसे] मैंने राजमहलके चारों ओर महीन बुनाईका एक रेशमी जाल लगा दिया है। अगर प्रदर्शनकारी कुछ फेंकें-फांकेंगे तो वह उसमें उलझकर रह जायेगा और अपने राजमहलका बाल भी न बाँका होगा।

राजा : लेकिन प्रदर्शनकारियोंकी कुछ आवाज़ें? इनके बारेमें क्या सोचा है?

रक्षामन्त्री : [मुस्कराकर] वही तो सबसे असम्भव कार्य है जिसे हम सम्भव करने जा रहे हैं। हमारे विशेषज्ञ बराबर यह सोच रहे हैं कि विरोधियोंकी आवाज़ कैसे बन्द की जाये?

महामन्त्री : महाराज, विरोधकी साफ़-सुथरी आवाज़ बन्द करनेका प्रयास मत कीजिए: फिर तो आप सत्यका गला ही घोंट देंगे।

राजा : [मुस्कराकर] हम सिर्फ़ असत्यका गला घोटेंगे महामन्त्री। दरअसल हमें अखण्ड शान्ति चाहिए ताकि हम एकाग्रचित्त होकर अपने परम सत्यकी स्थापना कर सकें और हमारे परम सत्यका प्रतीक शुतुरमुर्ग स्थापित हो सके। सत्यमेव जयते!

[राजा शान्तिसे अपने सिंहासनपर बैठ जाता है। तभी बाहर-से क्रुद्ध भीड़का कोलाहल पुनः उभरकर विलीन होता है।]

भाषणमन्त्री : [उत्तेजित] अब यह विरोधीलाल एक समस्या बनता जा रहा है।

राजा : [शान्तिसे] समस्याएँ ख़ुद ही अपना समाधान होती हैं भाषणमन्त्री।

रक्षामन्त्री : लेकिन महाराज, यह विरोधीलाल एक विशेष समस्या है।

राजा : तो उसका समाधान भी विशेष होगा।

भाषणमन्त्री : क्षमा करें महाराज, विरोधीलालके अस्तित्वका अर्थ आप ग़लत आँक रहे हैं।

रक्षामन्त्री : मुझे कहना तो नहीं चाहिए महाराज, लेकिन विरोधीलाल बड़ा ही तेजस्वी है।

भाषणमन्त्री : और उसके शब्दोंमें जादू है, जादू !

रक्षामन्त्री : वह जबतक जीवित है, विरोधका ज्वालामुखी बराबर फूटता रहेगा।

महामन्त्री : [गम्भीरतासे] और वह सदैव जीवित रहेगा।

राजा : [व्यंग्यसे] क्यों ? क्या वह अमर है ?

महामन्त्री : नहीं महाराज, विरोधका दर्शन अमर है। वह नहीं तो कोई और उत्तराधिकारमें विरोध पाता रहेगा, राजमहलके सामने प्रदर्शन होते रहेंगे और एक दिन इतिहास बदल जायेगा

: तबतक एक इतिहास बन चुकेगा महामन्त्री। हमारा शुतुरमुर्ग़ तबतक इतना ऊँचा उठ जायेगा कि यह सब छुद्र इतिहास-प्रवर्त्तक बौने लगेंगे—शुद्ध बौने !

:न्त्री : तो भी कालचक्रकी गति नहीं रुकेगी और सत्य उद्घाटित होकर रहेगा और...

: [बीचमें] और शुतुरनगरीका विघटन हो जायेगा और शुतुरप्रतिमाका अन्त। [मुसकराकर] प्रश्न आदि और अन्तका नहीं, वर्तमानका है।

महामन्त्री : वर्तमान इतना सरल और संक्षिप्त नहीं है महाराज कि उसे आप परिभाषित कर सकें।

राजा : महामन्त्री हम आपके बढ़ते हुए युग-बोधकी प्रशंसा करते हैं पर वर्तमानका यथार्थ हम आपसे ज्यादा समझते हैं।

[दृश्यभूमिसे क्रुद्ध भीड़का शोर उभरकर विलीन होता है]

और इसीलिए हम विरोबीलालसे भयभीत नहीं। सच तो यह है कि जबतक हमारा सोनेका शुतुरमुर्ग बनकर पूरा नहीं हो जाता और उसपर स्वर्णछत्रकी स्थापना नहीं हो जाती—जबतक हम किसीसे भयभीत नहीं।

[महारानीका तेज़ीसे प्रवेश। उनके हाथमें एक दर्पण है]

रानी : पर मैं भयभीत हूँ।

राजा : महारानी!

रानी : मैं सचमुच भयभीत हूँ।

राजा : क्या हुआ महारानी?

रानी : मैं अपने कक्षमें दर्पणके सामने अपने केश सँवार रही थी। तभी एक पत्थरका टुकड़ा दनदनाता हुआ आकर सीधा मेरे दर्पणको लगा और यह चारों कोणोंसे टूट गया।

राजा : रक्षामन्त्री, आप तो कह रहे थे कि आपके सुरक्षा-प्रबन्ध अभेद्य हैं।

रक्षामन्त्री : क्षमा करें महाराज, कहीं कोई त्रुटि रह गयी होगी।

रानी : लेकिन महाराज, अगर रक्षामन्त्रीजीकी त्रुटिसे मेरा अंग भंग हो जाता तो क्या होता? इन्हें दण्ड मिलना चाहिए।

रक्षामन्त्री : [भयभीत] महारानी!

राजा : हमें दुःख है महारानी कि हम आपसे सहमत नहीं।

रानी : महाराज!

राजा : रक्षामन्त्रीको तो पुरस्कार मिलना चाहिए। मन्त्रीके आभारी हैं कि इन्होंने हमारी सुर... एक त्रुटि हमें इस प्रकार दिखलाई। ...रे दूर तो कर सकेंगे। हम ... ...गा, लेकिन वह हमें स्वीकार है।

रक्षामन्त्री : महाराजकी जय हो।

[रानी अपने हाथका दर्पण राजाकी ओर बढ़ाती है]

रानी : परन्तु महाराज, देखिए तो क्या दुर्दशा हो गयी है मेरे दर्पणकी ?

राजा : [अचानक प्रसन्नतासे] महारानी…महारानी…यह क्या…अरे कितनी अद्भुत बात है ! इसमें तो मेरे शुतुरमुर्ग़का चित्र उभर आया है…देखो…देखो…दर्पण ऐसा टूटा है कि मेरे शुतुरमुर्ग़की सजीव आकृति बन गयी है, महारानी ! हम चाहते हैं कि हमारे राज्यके सारे दर्पण विरोधियोंके सामने कर दिये जायें। वे अपना सही प्रतिबिम्ब देखनेके लिए उन्हें तोड़ देंगे और इस प्रकार असंख्य शुतुरमुर्ग़ोंकी रचना होगी।

[illegible]मन्त्री : आप धन्य हैं प्रभु ! तुक-भरी बेतुकी बातें, आदर्शहीन आदर्श और तर्कहीन तर्कोंका सत्य तो कोई आपसे सीखे।

[illegible] : महामन्त्री, हम आपकी सत्यवादिताकी प्रशंसा करते हैं लेकिन आपका सत्य व्यावहारिक नहीं। [रानीसे] महारानी, शुतुरनगरीके विधानके अनुसार दूसरों-द्वारा धोखेसे निर्मित इस अपूर्व कलाकृतिका सृजनकर्ता हम तुम्हें ठहराते हैं और घोषणा करते है कि आजसे तुम हमारे राज्यकी कलामन्त्री हुई। सत्यमेव जयते।

[रानी राजासे दर्पण लेकर प्रसन्नतासे उसे चूमती है और फिर रक्षामन्त्रीके पास सलज्ज भावसे आती है।]

रानी : मैं आपको बहुत आभारी हूँ रक्षामन्त्रीजी। यदि आपकी सुरक्षाव्यवस्थामें यह ढील न होती तो मुझे कलामन्त्रीका पद कदापि न मिलता। कोटिशः धन्यवाद स्वीकार करें।

रक्षामन्त्री : [गद्गद] महारानी !

[रानीका धीरे-धीरे प्रस्थान। रानी टूटे दर्पणको अपने सिरपर दोनों हाथोंसे सँभाले है। सभी मन्त्री आदरसे झुकते हैं। क्षण-भर बाद दूसरी ओरसे दासीका प्रवेश। उसके हाथमें एक तीर है।]

दासी : महाराजकी जय हो। अभी-अभी यह तीर राजकीय कक्षके अन्दर आकर गिरा है।

[राजा तीर लेता है। दासी सादर अन्दर चली जाती है]

राजा : [तीरमें लगे पत्रको देखकर] यह तो कोई पत्र जान पड़ता है। महामन्त्रीजी, देखिए तो इसमें क्या है ?

[राजा पत्र देखकर सिंहासनपर जा बैठता है। सभी मन्त्री निकट आते हैं।]

महामन्त्री : [पढ़कर] विरोधीलालका पत्र है। आपसे मिलना चाहता है।

राजा : पर हम उससे नहीं मिलना चाहते।

भाषणमन्त्री : बिलकुल ठीक ! महाराजका निर्णय अन्तिम है।

रक्षामन्त्री : विरोधीलालसे मिलना तो दूर, हमें तो उसकी कल्पनासे भी घृणा है।

महामन्त्री : हम जिसे घृणा कहते हैं, वस्तुतः वह भय है।

राजा : तो आप यह कहना चाहते हैं कि हम विरोधीलालसे भयभीत हैं।

महामन्त्री : हाँ महाराज, आप भयभीत हैं। तभी तो आप सत्यसे साक्षात्कार नहीं करना चाहते।

राजा : महामन्त्री !

महामन्त्री : और इसीलिए आपको विरोधीलालसे जरूर मिलना चाहिए।

महामन्त्री : क्योंकि सत्यसे साक्षात्कार करना आवश्यक है और आपके साथ अनिवार्यता।

राजा : क्या सचमुच विरोधीलाल सत्यका इतना बड़ा सन्देश-वाहक है?

महामन्त्री : सत्य क्या है महाराज? हमारी शुतुरनगरीमें केवल एक सत्य है जिसे मैं जान पाया हूँ। वह यह कि सजग और संवेदनशील होकर जीना सम्भव नहीं है और विरोधीलालका यही दुर्भाग्य है।

राजा : [कुछ सोचकर] ठीक है तो हम उससे मिलेंगे।

भाषणमन्त्री : [प्रतिवाद] कुछ भी हो महाराज, आपका विरोधीलालसे मिलना ठीक नहीं है।

रक्षामन्त्री : भाषणमन्त्री ठीक कहते हैं महाराज। विरोधीलालसे मिलनेका अर्थ है हमारी शक्ति और सत्ताका उपहास।

भाषणमन्त्री : महाराज, यदि आप विरोधीलालसे मिले तो हमारा घोर अपमान होगा।

[illegible] : महाराज, आप अपनी स्पष्ट असहमति दें।

[illegible]जा : [मुसकराकर] हमारी असहमति है।

[illegible] : महाराज!

राजा : [मुसकराकर] हमारी असहमति विरोधीलालको क्षुद्र सिद्ध करनेके लिए है और आदमी एक बार क्षुद्र सिद्ध हो गया तो उसपर आक्रमण सरल हो जाता है।

महामन्त्री : तो आप विरोधीलालसे मिलेंगे।

राजा : हाँ, पर थोड़े विलम्बसे।

[दासीका तीर लेकर प्रवेश]

दासी : महाराजकी जय हो।

[महामन्त्री तीर ले लेता है—दासीका प्रस्थान]

मन्त्री : [पत्र पढ़कर] विरोधीलालका दूसरा पत्र। वह आपसे तुरन्त मिलना चाहता है।

राजा : [मुस्कराकर] देखता हूँ विरोधीलालका धैर्य समाप्त हो रहा है, यह शुभ चिह्न है। आइए, तबतक हम विषयान्तर करें। अब पहली बात तो हम यह जानना चाहेंगे कि हमारे शुतुरमुर्गका निर्माण-कार्य पूरा हुआ या नहीं?

भाषणमन्त्री : शुतुरमुर्गका निर्माण-कार्य पूरा हो चुका है, महाराज! बल्कि अबतक तो उसपर स्वर्णछत्र भी लग चुका होगा।

राजा : [प्रसन्न] स्वर्णछत्र भी लग चुका है! हम अपने विकास-मन्त्रीकी कार्यक्षमताके आभारी हैं। भाषणमन्त्री! उन्हें इसी क्षण बुलवाइए हम उन्हें राष्ट्रीय सम्मान देना चाहेंगे।

भाषणमन्त्री : लेकिन महाराज वे अस्वस्थ हैं।

राजा : अस्वस्थ हैं?

महामन्त्री : पोषक तत्त्वोंकी अधिकतासे उन्हें अपच हो गया है महाराज!

भाषणमन्त्री : शुतुरमुर्गको बनवाने और उसपर स्वर्णछत्रकी स्थापनाके कामने उन्हें बहुत व्यस्त रखा। वे कन्दमूल फल खाकर रात-दिन काम करते रहे। अधिक फल खा लेनेसे उन्हें भयंकर अपच हो गया।

राजा : पर हमारे शुतुरमुर्गपर स्वर्णछत्रकी स्थापना तो हो गयी है न?

भाषणमन्त्री : इस बातका निश्चित समाचार हमें मिला है।

राजा : [भावावेशमें] तो इसका अर्थ यह है कि हम शुतुरमुर्गके उद्घाटनका प्रबन्ध अभीसे करें। आह! कितना महान् होगा वह क्षण जब हमारे शुतुरमुर्गका अनावरण होगा! मन्त्रियो, शुतुरमुर्गके उद्घाटनका प्रबन्ध हम परम सत्यवादी

महामन्त्रीजीको सौंपते हैं और इस कार्यके लिए एक सहस्र स्वर्णमुद्राएँ स्वीकृत करते हैं। [महामन्त्रीसे] आप प्रसन्न हैं न ?

महामन्त्री : महाराज, दुःख और सुखको निरपेक्ष भावसे लेना मैंने सीखा है। मेरी नियुक्तिसे आप यदि प्रसन्न हैं तो—मैं भी हूँ महाराज।

राजा : हम प्रसन्न हैं।

[महामन्त्री अभिवादन करता है। राजा दाहिना हाथ उठाकर आर्शीर्वाद देता है।]

सत्यमेव जयते।

[दासीका पुनः प्रवेश—उसके हाथमें एक तीर है।]

दासी : यह नया तीर है महाराज।

राजा : हमें मालूम है दासी। द्वारपालसे कह दो, विरोधीलालको हमसे मिलनेकी आज्ञा है।

[दासीका प्रस्थान]

णमन्त्री : तो····क्या आप विरोधीलालसे यहीं, इसी राजकीय कक्षमें मिलेंगे ?

राजा : [मुसकराकर] अवश्य।

रक्षामन्त्री : [भयभीत] परन्तु महाराज, इस मिलनसे पूर्व हमें विरोधीलालकी तलाशी ले लेनी चाहिए। वह कोई गुप्त अस्त्र-शस्त्र न लिये हो। आपकी व्यक्तिगत सुरक्षाका प्रश्न है।

राजा : तलाशी लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं, रक्षामन्त्री! विरोधीलालसे मिलनेकी आज्ञा देकर हमने उसे निःशस्त्र कर दिया है।

मापणमन्त्री : विरोधीलालके आगमनपर मुझे क्या करना होगा महाराज ?

राजा : आप केवल मौन रहें।

रक्षामन्त्री : और मैं ?

राजा : आप भी। [महामन्त्रीसे] और आप भी।

महामन्त्री : मैं मौन रहनेका प्रयास करूँगा महाराज, लेकिन वचन नहीं दे सकता।

राजा : आप वचन न दें। सिर्फ़ इतना करें कि आप वहीं बोलें जहाँ हम आपको बोलनेका संकेत करें।

[पृष्ठभूमिमें विरोधीलालकी आवाज़ सुनाई पड़ने लगती है। राजा तुरन्त गम्भीर मुद्रा बनाकर सिंहासनपर बैठ जाता है, तीनों मन्त्री सिंहासनके पीछे प्रतिमाओंकी तरह खड़े हो जाते हैं। विरोधीलाल नारे लगा रहा है: राजा—मुर्दाबाद, शुतुरमुर्गका नाश हो। विरोधीलालका ऐसे प्रवेश मानो वह भागता आ रहा हो।]

विरोधीलाल : [गरजकर] सिंहासनपर बैठे हुए व्यक्तिसे मैं एक प्रश्न पूछ सकता हूँ ? आप हो हैं—शुतुरनगरीके महाराज ?

राजा : [शान्तिसे] हाँ, हम हैं शुतुरनगरीके महाराज, और तभी सिंहासनपर बैठे हैं।

विरोधीलाल : [व्यंग्यसे] मैंने तो सुना था कि आप भूमिपर बैठते हैं और आपके योग्य मन्त्री सिंहासनपर !

राजा : आपने कई बातें मिथ्या सुनी हैं। इनकी चर्चा हम आगे करेंगे। पहले इनका परिचय प्राप्त कीजिए। ये हैं परम मनस्वी महामन्त्री, ये आयव्ययमन्त्री और ये रक्षामन्त्री।

राजा : यन्त्र ! आप हमारे योग्य मन्त्रियोंको यन्त्र कहकर उनके साथ अन्याय कर रहे हैं।

विरोधीलाल : मुझे मालूम है—आपने इन्हें कभी यह महसूस नहीं होने दिया कि ये यन्त्र हैं। तभी तो आप देशके साथ इतना बड़ा षड्यन्त्र कर सके।

राजा : षड्यन्त्र ? विरोधीलालजी, आप हमारे विरुद्ध राजनैतिक प्रचार कर रहे हैं। हमने ठीक सुना था, आप हमारा व्यक्तिगत विरोध करते हैं।

विरोधीलाल : मैं आपका विरोध नहीं करता, आपकी नीतियोंका विरोधी हूँ।

राजा : नीतियाँ ?

विरोधीलाल : जी हाँ, नीतियोंके नामसे प्रचलित आपके कुछ सिद्धान्त।

राजा : सिद्धान्त ?

विरोधीलाल : अब यह न कहिएगा कि अपनी सुविधाके लिए बनायी हुई नीतियाँ या सिद्धान्त या वो जो कुछ भी हैं, उनका ज्ञान आपको नहीं। क्या आप नहीं जानते कि जीवनकी विषम समस्याएँ शुतुरनगरीको पीस रही हैं ? अनास्था, भय, भूख और दिशा-हीनताका अदृश्य कोहरा धीरे-धीरे उसे निगल रहा है। दुःखान्त नाटक। शुतुरनगरीकी पृष्ठभूमिपर मानव-जीवन एक दुःखान्त नाटक बनकर रह गया है। और इस नाटकके सूत्रधार आप हैं। पर इतना याद रखिए अब परदा गिरनेमें ज्यादा देर नहीं है।

राजा : [गम्भीरतासे] सत्यमेव जयते !

विरोधीलाल : आह ! आपका यह प्यारा वाक्य—सत्यमेव जयते, अर्थात् असत्य जीत रहा है तो फ़िलहाल उसे जीतने दो, अन्तमें तो सत्य ही जीतेगा। अर्थात् अगर असत्य, झूठ, छल-

कपट, दुष्टता, अन्याय एक हजार वर्ष तक रहे तो उसे रहने दो, अन्तमें तो सत्य न्याय और प्रेमकी विजय होगी ही। [कहकहे] सत्यमेव जयते—अर्थात् एक हजार वर्ष और।

राजा : हम आपकी बातोंसे उत्तेजित नहीं होते।

विरोधीलाल : आप इन बातोंसे उत्तेजित नहीं होते, यही तो हमारे देश-का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

राजा : हमारी शान्ति और संयम, हमारी शक्तिका प्रतीक है, आप उसे जो भी नाम दें।

विरोधीलाल : मैं उसे नाम दूँगा? यह नाम तो स्वयं आपने अपनी काली करतूतोंसे कमाया है। हर वह शब्द जो नीचताओंका पर्यायवाची है, आपका ही नाम है।

भाषणमन्त्री : विरोधीलालजी, महाराजको धारावाहिक गालियां देना आप-जैसे पढ़े-लिखे व्यक्तिको शोभा नहीं देता।

रक्षामन्त्री : इन नग्न अशिष्टताओंका परिणाम भयंकर हो सकता है।
[महामन्त्री चुप हैं]

राजा : महामन्त्री, आपका कथन?

महामन्त्री : महाराज, हर वह कथन नैतिक कथन है जो दूसरोंको प्रभावित और परिवर्तित कर सके।

राजा : हम आपका आशय नहीं समझे।

पहली बात तो हम यह कहेंगे कि अपने प्रति सहज और सच्चा होना जीवन-संघर्षके लिए अपर्याप्त ही नहीं बल्कि एक प्रकारकी अयोग्यता है।

विरोधीलाल : [व्यंग्यसे] एकान्तका लाभ उठाकर दूसरी बात भी कह डालिए।

राजा : आप अपना मुँह बन्द करनेके लिए कितनी स्वर्णमुद्राएँ लेंगे?

विरोधीलाल : [क्रोधित] महाराज,—आप अपनी स्वर्णमुद्राओंसे मुझे खरीदना चाहते हैं? आत्मा बेचकर यदि मुझे सारा विश्व मिल जाये तो भी मेरे किस कामका?

राजा : हम सारा विश्व नहीं दे सकते, केवल स्वर्णमुद्राएँ दे सकते हैं। सोच लीजिए, अपनी वाणी देनेके लिए आप क्या लेना चाहेंगे?

विरोधीलाल : मेरी वाणी बिकाऊ नहीं है महाराज, क्योंकि वह सारे देशकी वाणी है।

राजा : [क्रोधित] तो फिर हमें आपकी वाणीका दमन करना होगा, जो हम सरलतासे कर सकते हैं।

[विरोध]ीलाल : पर आप सारे देशका दमन न कर पायेंगे। आज सारे देशका स्वर एक है।

राजा : [क्रोधित] देश···देश···देश···। आप जानते हैं आप क्या प्रलाप कर रहे हैं? हम आपको देशका प्रतिनिधि मानकर बात नहीं कर रहे हैं। [मुस्कराकर] हम आपको सिर्फ़ आपका प्रतिनिधि मानते हैं। [क्रोधित] विरोधीलालजी, अभी सही अर्थोंमें यातनाएँ आपने भोगी नहीं हैं। अभी तो आप अपनी भीड़के प्रिय नेता हैं। कल्पना कीजिए, यदि आप भीड़से दूर कर दिये जायें? यदि आपको उस जय-जयकारसे निर्वासित कर दिया जाये जिसके

आप आदी हो चुके हैं ? यदि आपसे वह पुष्पमालाएँ, अभि-
नन्दन-मंच, श्रोता छीन लिये जायें ? अच्छी तरह सोच
लीजिए इन बातोंको और फिर कह दीजिए कि मेरे
प्रस्तावको ठुकराकर आप कष्टोंके चक्रव्यूहमें न फँसेंगे ?
[विराम] विरोधीलालजी, मानव जीवनके सब महान्
परिवर्तन समझौतेसे सम्भव हुए हैं : विरोधीलालजी,
हमें शान्ति चाहिए—अखण्ड शान्ति—ताकि हम अपने
शुतुरमुर्गकी स्थापना कर सकें ।

विरोधीलाल : शुतुरमुर्ग ! आह ! कितना प्यारा पक्षी है ! जब नग्न
सत्य उसे चारों ओरसे घेर लेते हैं और वह भाग नहीं पाता
तो आँखों समेत वह अपनी चोंच रेतमें डुबो देता है और
पलायनकी उस सम्पूर्ण अनुभूतिमें यह कल्पना करता है
कि उसे कोई नहीं देख रहा है ! कोई नहीं जान रहा है,
कोई नहीं समझ रहा है और वह सुरक्षित है !

राजा : लेकिन सचेत शुतुरमुर्ग अच्छी तरह जानता है कि उसे
सब देख रहे हैं, सब समझ रहे हैं और वह सुरक्षित
नहीं है ।

विरोधीलाल : फिर वह क्या करता है ?

राजा : सोनेके शुतुरमुर्गका निर्माण और स्वर्णछत्रकी स्थापना ।

विरोधीलाल : और यदि स्वर्णछत्रकी स्थापना न हुई हो तो ?

राजा : तो ! तो पुनः प्रयास करता है ।

विरोधीलाल : तो सुन लीजिए, आपके शुतुरमुर्गपर स्वर्णछत्रकी स्थापना

मन्त्री हड़प गये हैं, उन्हें अपच हो गया है, और इसीलिए वे आजकल आपसे नहीं मिल रहे हैं।

राजा : विकासमन्त्रीने यह क्या किया ?

विरोधीलाल : वही जो आप सारे देशके साथ कर रहे हैं। परन्तु प्रश्न तो यह है कि आखिर आप सोनेका शुतुरमुर्ग क्यों बनवा रहे हैं? देशका सारा धन, सारी प्रतिभा आप क्यों बरबाद कर रहे हैं? शुतुरमुर्गकी प्रतिमापर स्वर्णछत्र लगवाने-जैसा बेहूदा काम आप क्यों कर रहे हैं?

राजा : आपके इन प्रश्नोंसे कहीं अधिक सार्थक प्रश्न इस समय हमारे सामने है। [निश्चय] भ्रष्टाचारी विकासमन्त्री-को हम ऐसा दण्ड देंगे कि सारा देश काँप उठेगा !

[राजा सिंहासनके पास आता है]

हम शुतुरनगरीके महाराज, यह घोषणा करते हैं कि विकासमन्त्री अब इस क्षणसे हमारे विकासमन्त्री नहीं रहे। उन्होंने देशके धनका दुरुपयोग करके अक्षय अपराध किया है। हम उन्हें अपराधी घोषित करते हैं। [घण्टा बजाकर] सत्यमेव जयते !

[राजा सीधा विरोधीलालके पास आता है]

आपने देखा, हम न्याय करनेमें देर नहीं करते। हम आपके आभारी हैं कि आपने हमें यह सूचना दी, अब एक निवेदन और है। [क्षणिक विराम] क्या आप शुतुर-नगरीके विकासमन्त्री बनना पसन्द करेंगे।

विरोधीलाल : [अचानक जैसे पिघल गया हो] महाराज···मैं···मैं।

राजा : [गरजकर] मेरे प्रश्नका उत्तर दीजिए। क्या आप शुतुरनगरीके विकासमन्त्री बनना पसन्द करेंगे ?

विरोधीलाल : [हकलाकर] महाराज···आप महाराज····आप····वह पहले व्यक्ति हैं जिसने मेरी प्रतिभाको पहचाना है। हाँ···· महाराज···मुझे शुतुरनगरीका विकासमन्त्री बनना स्वीकार है। एक बार नहीं···मुझे मन्त्री बनना हज़ार बार स्वीकार है।

[राजाके चरणोंमें] महाराजकी जय हो।

[राजा सिंहासनकी ओर मुड़ता है, विरोधीलाल पीछे-पीछे है]

विरोधीलाल : [उत्तेजित] मैं····मैं वचन देता हूँ महाराज कि शुतुरमुर्ग़-पर स्वर्णछत्रकी स्थापना पुनः होगी। अल्प समय और अल्प धनमें जो कार्य आपके भूतपूर्व विकासमन्त्री न कर पाये····वह मैं करूँगा····वह मैं करूँगा महाराज !

राजा : [सिंहासनपर बैठकर मुसकराते हुए] हमें आपकी क्षमतापर विश्वास है विरोधीलालजी।

विरोधीलाल : बस एक कृपा और कीजिए। आजसे मुझे विरोधीलाल न कहें।

राजा : [प्रसन्नतासे] हमें स्वीकार है, हम आजसे आपको एक नाम देंगे— 'सुबोधीलाल'।

[विरोधीलाल राजाके चरणोंमें झुकता है। राजा दाहिना हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है—सत्यमेव जयते। फिर घण्टा बजाता है। तीनों मन्त्रियोंका प्रवेश]

राजा : [प्रसन्न] सज्जनो, शुतुरनगरीके नये विकासमन्त्रीसे मिलिए।

विरोधीलाल : [आश्चर्य] आपको···आपको···मेरा नया नाम कैसे मालूम हुआ ?

महामन्त्री : [मुसकराकर] हम अपने महाराजको पहचानते हैं न ! नया काम देनेके साथ-साथ वे नया नाम भी देते हैं। विरोधीलालके बाद सुबोधीलाल। यही एक नाम निकटतम था।

[भीड़का कोलाहल उभरता है, दासीका प्रवेश]

दासी : महाराजकी जय हो, मामूलीरामजी मिलना चाहते हैं।

राजा : मामूलीराम ? यह कौन व्यक्ति है ?

विरोधीलाल : राजमहलके सामने खड़ी हुई भीड़का अंग।

राजा : [जैसे सब याद आ गया हो] भीड़—हाँ ! भीड़का अस्तित्व तो हम जैसे भूल ही गये थे। मामूलीरामको अन्दर भेज दो, दासी।

[दासीका सादर प्रस्थान]

सुबोधीलालजी, क्या सोचा है आपने इस भीड़के बारेमें।

विरोधीलाल : वही सोच रहा हूँ।

राजा : क्या हम सोचनेमें आपकी सहायता करें ?

विरोधीलाल : यही सोच रहा हूँ।

राजा : शायद आपको कुछ प्रश्नोंके उत्तर चाहिए। उत्तर, जो आप मामूलीरामको देना चाहेंगे।

विरोधीलाल : जी हाँ।

राजा : आप मामूलीरामसे स्पष्ट कह दें कि बिना शक्तिके देशकी सेवा नहीं हो सकती और बिना पदके शक्ति नहीं मिल सकती—इसलिए आपने शुतुरनगरीके विकासमन्त्रीका पद स्वीकार कर लिया है। सत्यमेव जयते।

[राजाका प्रस्थान, विरोधीलाल चिन्तित]

महामन्त्री : धर्म-संकट और उच्च अभिलाषाएँ, इन दोनोंका कोई मेल नहीं है, सुबोधीलालजी। एकका अन्त ही दूसरेका आरम्भ है।

विरोधीलाल : मैं इन परिभाषाओंको लेकर चिन्तित नहीं हूँ महामन्त्री। न ही मुझे उत्तरोंका प्रश्न व्यथित किये है। मेरी समस्या इन सब बातोंके सरलीकरणकी है। मामूलीराम इस परिवर्तनको सहज रूपसे स्वीकार करे यही मेरी समस्या है।

[मामूलीरामका प्रवेश]

मामूलीराम : [सभय] मैं · मैं अन्दर आ जाऊँ।

विरोधीलाल : आओ मामूलीराम।

[मामूलीराम मन्त्रियोंको सभय देखता है—सीधा विरोधीलालके पास आता है।]

मामूलीराम : आप···आपने तो बड़ी देर लगा दी विरोधीलालजी। बाहर सब लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। राजासे कुछ बातचीत हुई ? क्या निर्णय हुआ ?

विरोधीलाल : [अचानक] हमारी जीत हुई है मामूलीराम ?

मामूलीराम : [प्रसन्नतासे] सच ?

विरोधीलाल : हाँ····महाराजने मेरी शर्त मान ली है।

मामूलीराम : [प्रसन्नतासे] शर्त मान ली है ! हे भगवान्, बड़ा उपकार किया तुमने !

विरोधीलाल : वो भी मिलेंगे मामूलीराम—सब-कुछ मिलेगा···सब-कुछ मिलेगा। दूध-घीकी नदियाँ बहेंगी।

मामूलीराम : तो फिर जल्दी चलिए विरोधीलालजी, यह शुभ समाचार हम सबको सुनायें।

विरोधीलाल : इस कामके लिए मैं तुम्हें नियुक्त करता हूँ—मामूलीराम।

मामूलीराम : लेकिन—लेकिन—मैं ठीकसे सब बातें नहीं कह पाऊँगा।

विरोधीलाल : तुम जिस भी ढंगसे कहोगे, भीड़के लिए वही ठीक होगा।

मामूलीराम : लेकिन आप क्यों नहीं चलते ?

विरोधीलाल : अभी मेरा राजमहलसे जाना ठीक नहीं। जबतक महाराज-का निर्णय कार्य रूपमें नहीं बदल जाता तबतक मुझे यहीं रहना चाहिए।

मामूलीराम : हाँ, यह तो है। कहीं महाराज अपनी बातसे बदल गये तो मुश्किल होगी।

विरोधीलाल : और बात बदल गयी तो बदल गयी, तुम कितने समझ-दार हो मामूलीराम।

मामूलीराम : [सलज्ज भावसे] यह सब आप बड़ोंकी कृपा है।
[बाहरसे पुनः भीड़का शोर]

विरोधीलाल : अब तुम्हें जाना चाहिए····वे सब शोर मचा रहे हैं।

मामूलीराम : ठीक है, अब मैं जाता हूँ। [मुड़कर] पर मैं उनसे क्या सन्देश कहूँ ?

विरोधीलाल : सबको सब-कुछ मिलेगा—और—

मामूलीराम : [बीचमें] सचकी जीत हुई।

विरोधीलाल : मामूलीराम, अब तुम्हें अपनी भाषा सुधारनी चाहिए। सचकी जीत हुई नहीं। सत्यमेव जयते।
[सप्रयास] सत्यमेव जयते···जयते !

मामूलीराम : लेकिन यह शब्द बहुत बड़ा है और कठिन भी।

मामूरा...

विरोधीलाल : बड़े मज़ेमें। मतलब देरसे समझमें आता है मामूलीराम, पर एक बार समझमें आ जाये तो देर तक रहता है। समझे ? तो क्या कहोगे ?

मामूलीराम : सबको सब-कुछ मिलेगा और सत्यमेव जयते—[प्रसन्नतासे चीखता है] सबको सब कुछ मिलेगा और सत्यमेव जयते।

[यही चिल्लाते हुए मामूलीरामका प्रस्थान]

[विरोधीलाल मन्त्रियोंकी ओर देखता है, महामन्त्रीको छोड़कर सब खुलकर हँसते हैं। अन्दरसे दासीका प्रवेश]

दासी : [ऊँचे स्वरमें] सावधान·· सावधान···चतुरनगरीके महाराज पधार रहे हैं।

[सभी मन्त्री सादर खड़े होते हैं। अन्दरसे राजाका प्रवेश, सभी मन्त्री आदरसे सिर झुकाते हैं, राजा सिंहासनपर जा बैठता है]

राजा : चतुरनगरीके संविधानके अनुसार हम घोषणा करते हैं कि सुबोधीलालजीका शपथ-समारोह तुरन्त सम्पन्न किया जाय। महामन्त्रीजी !

महामन्त्री : महाराज।

राजा : आप सुबोधीलालजीको शपथ-समारोहके रीति-रिवाज समझावें। रक्षामन्त्रीजी !

रक्षामन्त्री : महाराज !

राजा : भाषणमन्त्री ! मामूलीराम जब गया तो उसके चेहरेके भाव कैसे थे ?

भाषणमन्त्री : महाराज, जब वह आया तो चिन्तित था और जब गया तो प्रसन्न ।

राजा : [सिंहासनसे उतरकर] उसे बहुत समय तक प्रसन्न नहीं रहना चाहिए ।

भाषणमन्त्री : क्यों महाराज ?

राजा : यह तो आप मानते हैं कि मामूलीराम भीड़का अंग है ?

भाषणमन्त्री : मामूलीराम स्वयं भीड़ है महाराज !

राजा : इस भीड़ने अपनी आस्था और विश्वास विरोधीलालको दिये थे ।

भाषणमन्त्री : हाँ महाराज ।

राजा : और अब विरोधीलाल सुबोधीलाल हो गया है ।

भाषणमन्त्री : हाँ महाराज ।

राजा : इसलिए अब भीड़को सही बात तुरन्त मालूम हो जानी चाहिए ।

भाषणमन्त्री : क्यों महाराज ?

राजा : ताकि उसकी आस्था और विश्वासोंकी गति हम दूसरी ओर मोड़ सकें ।

भाषणमन्त्री : हाँ महाराज ।

राजा : हम प्रयास करेंगे कि भीड़ हमारी हो सके ।

भाषणमन्त्री : सत्य है महाराज ।

राजा : और विरोधीलालको हम भीड़से सम्पूर्ण काट सकें ।

भाषणमन्त्री : तर्कसंगत है महाराज ।

राजा : इसलिए मामूलीरामको तुरन्त नाराज करना आवश्यक है ।

भाषणमन्त्री : आप धन्य हैं महाराज ।

राजा : [गम्भीरतासे] मामूलीरामको एक बार और राजमहलमें लाना होगा ।

भाषणमन्त्री : राजमहलमें लाना होगा ?

[महामन्त्रीका प्रवेश]

राजा : हाँ भाषणमन्त्री, विरोधीलालके शपथ-समारोहपर मामूलीराम राजमहल आयेगा । वह अपनी आँखोंसे सब-कुछ देखेगा । फिर वह बाहर जायेगा, उसका कटु अनुभव भीड़को मालूम होगा । विरोधीलालको भीड़ सदैवके लिए अलग कर देगी । वह सम्पूर्ण हमारा हो जायगा । और दिशाहीन भीड़को हमारी होनेका अवसर मिलेगा ।

[भाषणमन्त्रीका प्रस्थान]

महामन्त्री : दिशाहीनोंको सही दिशा देना इतना सरल नहीं है महाराज और मामूलीरामका जाग्रत होना भी ठीक नहीं ।

राजा : क्यों ?

महामन्त्री : मामूलीरामको इतने बड़े कटु अनुभवोंके आमने-सामने करना उचित नहीं । कटु अनुभव बहुत अच्छे शिक्षक होते हैं, महाराज ।

राजा : और तभी तो मामूलीरामको कटु अनुभव होने चाहिए ।

महामन्त्री : महाराज ! कटुता मनुष्यको तुरन्त सजग बना देती है और सजगता व्यक्तिको असन्तोषी । इस असन्तोषका ज्ञान ही क्रान्तिका आरम्भ है ।

महामन्त्री : मामूलीराम और उसके साथियोंकी अपनी सीमाएँ हैं। उन्हें इन सीमाओंमें रहने देना ही हमारे लिए शुभ है।

राजा : [हँसकर] इसका अर्थ यह है कि आप मामूलीराम और उसकी स्मरण-शक्तिको बिलकुल नहीं समझते। हम मामूलीरामको अच्छी तरह समझते हैं। वह कुछ क्षणोंके लिए कटु भले ही हो जाय पर इस कटुतासे उसमें क्रान्ति उत्पन्न हो सकती है, ऐसा हम नहीं मानते।

[पृष्ठभूमिमें मंगलवाद्य, दासीका प्रवेश]

दासी : [घोषणा] सावधान ! सावधान ! गुडुम्बनगरीकी महारानी नये विकासमन्त्री श्री सुबोधीलालके शपथ-समारोहमें भाग लेनेके लिए पधार रही हैं।

[महारानीका प्रवेश]

राजा : आइए महारानी।

दासी : [घोषणा] नये विकासमन्त्री श्री सुबोधीलालजी !

[अन्दरसे विरोधीलालका प्रवेश। मंगलवाद्य बजते हैं। वह सिरसे पैर तक एक जालके अन्दर है। जालकी बागडोर रक्षामन्त्रीके हाथमें है। वे दोनों धीरे-धीरे सिंहासनके पास आते हैं। विरोधीलाल राजा-रानीको झुककर अभिवादन करता है। विरोधीलाल धीरे-धीरे एक कोनेमें खड़ा हो जाता है]

रक्षामन्त्री : [राजासे] समारोहके इन विशेष वस्त्रोंकी बागडोर अब आप सँभालें महाराज।

[राजा बागडोर सँभालता है।]

राजा : हम, गुडुम्बनगरीके महाराज—यह घोषणा करते हैं कि महारानी अब हमारे नये विकासमन्त्रीका तिलक करें और आरती उतारें।

महाराजको मालूम हो गया कि आपके पास आत्मा-जैसी चीज़ अब भी है तो अनर्थ हो जायगा। भलाई इसीमें है कि आप तुरन्त स्वीकार कर लीजिए कि आपके पास आत्मा नहीं है।

विरोधीलाल : मैं विरोधीलाल उर्फ़ सुबोधीलाल यह स्वीकार करता हूँ कि मेरे पास आत्मा-जैसी कोई चीज नहीं है। मैं कुल-देवता शुतुरमुर्गको साक्षी करके यह शपथ लेता हूँ कि आधा वचन और आधा कर्मसे अर्थात् महाराजका पूरा अनुयायी रहूँगा।

राजा : [एक हाथ उठाकर] सत्यमेव जयते।

सारे मन्त्री एक साथ : सत्यमेव जयते।

[मामूलीराम तथा भाषणमन्त्रीका प्रवेश]

मामूलीराम : सत्यमेव जयते।

[सबका ध्यान उसकी ओर जाता है]

भाषणमन्त्री : जनताके प्रतिनिधि श्री मामूलीरामजी नये विकासमन्त्री-को बधाई देंगे।

मामूलीराम : [प्रसन्नतामें] तो···तो····अपने विरोधीलालजी बली हो गये जो आप सब हैं। हे भगवान्, तू बड़ा न्यायी है। आख़िर सचकी जीत हुई। [पास जाकर] बधाई है विरोधीलालजी। लेकिन आप···आप···इस जालेके अन्दर क्यों हैं?

विरोधीलाल : [अचानक कराहते हुए] मामूलीराम, मेरा जीवन तो काँटोंकी सेज है। तुम सब आराममें रह सको इसलिए मुझे कष्ट पाना ही होगा। देखो··· देखो··· मेरी आँखोंमें आनन्दके आँसू हैं। तुम सबके सुखके लिए मैंने यह सब कष्ट ओढ़ लिये हैं।

मामूलीराम : [दुःखी स्वर] छिरोंजीलालजी, आपके त्यागको हम कभी नहीं भूल सकते। आप—आप सचमुच महान् हैं। आपने हम लोगोंके लिए क्या नहीं किया—और अब आप इस आफतको ओढ़े हैं ताकि हमें आराम मिल सके।

छिरोंजीलाल : भैया मामूलीराम—यह बिलकुल कहना नहीं कि मुझे [illegible] यातनाएँ दी गयीं। लोगोंके दुःखी होनेकी [illegible] मेरा कलेजा फटा जाता है। सबसे यही कहना कि मैं आराममें हूँ—मुझे स्वर्ग सुख है,—स्वर्ग चैन है!

मामूलीराम : [आँसू पोंछते] यही कहूँगा—बिलकुल यही कहूँगा।

राजा : [illegible] समारोह समाप्त हुआ। परम कृपालु महामन्त्रीजी [illegible] प्रजाके [illegible] के लिए नये [illegible] [illegible] ले जायँ।

महामन्त्री : श्रीमान् छिरोंजीलालजी।

[महामन्त्री आकर [illegible] पत्र देता है। छिरोंजीलाल [illegible] [illegible] है। [illegible] छिरोंजीलाल [illegible] पत्र [illegible] महामन्त्री—इसके [illegible] [illegible] [illegible] है।]

मामूलीराम : मुझे मंजूर है। लेकिन यह तो पूछ लेने दीजिए कि फिर कब आऊं? विरोधीलालजी!

[रक्षामन्त्री और भाषणमन्त्री एक साथ प्रहार करते हैं—मामूलीराम कोनेमें जा गिरता है। दोनों मन्त्री हाथ झाड़कर ऐसे चल देते हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो। वे जुलूसमें सम्मिलित होकर अन्दर जाते हैं।]

मामूलीराम : (बड़बड़ाते हुए) लेकिन यह तो मुझे पूछना ही पड़ेगा कि फिर कब आऊं? [राजा सिंहासनसे नीचे आता है]

मामूलीराम : [सभय] आप···आप कौन हैं?

राजा : महाराज।

मामूलीराम : महाराज? आपको मेरा प्रणाम है महाराज। मुझे····मुझे विरोधीलालजीसे मिलना है।

राजा : [गम्भीरतासे] अब तुम विरोधीलालसे कभी नहीं मिल सकते।

मामूलीराम : क्यों महाराज?

राजा : क्योंकि विरोधीलाल अब सुबोधीलाल हो गया है।

मामूलीराम : [दुःख] यह तो बहुत बुरा हुआ महाराज! उनके मां-बापने कितने मनसे उनका नाम विरोधीलाल रखा था। सोचिए तो, जब उनको मालूम होगा तो वे कितने दुखी होंगे!

राजा : हम प्रसन्न हुए मामूलीराम। तुम्हारा संकेत भीड़पर है न? भीड़ ही तो उसकी मां-बाप थी। उसे दुःख होगा—और होना भी चाहिए।

मामूलीराम : मैं···मैं समझा नहीं महाराज।

राजा : देखो मामूलीराम, अब सब कुछ बिल्कुल साफ है! विरोधीलालने तुम्हें और भीड़को धोखा दिया है।

मामूलीराम : धोखा दिया है ? हे भगवान् !

राजा : तुमने जो स्वयं देखा वह मुकुरनगरीका नया त्रिकालमन्त्री हो गया है।

मामूलीराम : जब आप कह रहे हैं तो जरूर सच होगा लेकिन महाराज आपने इतने धोखेबाज आदमीको मन्त्री बनाया ही क्यों ?

राजा : यह राज-काजकी बातें हैं मामूलीराम। कभी-कभी बाध्य होकर हमें वह सब करना पड़ता है जो हम नहीं चाहते।

मामूलीराम : लेकिन वह सब करना तो आपको अच्छा लगता है, जो आप चाहते हैं।

राजा : हम वही सब तो करते हैं जो हमें अच्छा लगता है।

मामूलीराम : तो फिर महाराज, हमारी माँगें कब पूरी होंगी ?

राजा : क्या तुम्हारी कोई माँग है ?

मामूलीराम : हाँ महाराज, और आप उन्हें सरलतासे पूरा कर सकते हैं।

राजा : हमें उनके बारेमें बतलाओ।

मामूलीराम : सबसे पहली बात तो यह कि हमें दो जूनका भोजन चाहिए। फिर तन ढँकनेको कपड़ा और रहनेको छोटा-सा घर। बस।

राजा : यह सब हम तुम्हें दे सकते हैं।

मामूलीराम : [प्रसन्नतासे] महाराज !

मामूलीराम : मुझे मंजूर है। लेकिन यह तो पूछ लेने दीजिए कि फिर कब आऊं ? विरोधीलालजी !

[रक्षामन्त्री और मापणमन्त्री एक साथ प्रहार करते हैं— मामूलीराम कोनेमें जा गिरता है। दोनों मन्त्री हाथ झाड़कर ऐसे चल देते हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो। वे जुलूसमें सम्मिलित होकर अन्दर जाते हैं।]

मामूलीराम : (बड़बड़ाते हुए) लेकिन यह तो मुझे पूछना ही पड़ेगा कि फिर कब आऊं ? [राजा सिंहासनसे नीचे आता है]

मामूलीराम : [समय] आप···आप कौन हैं ?

राजा : महाराज।

मामूलीराम : महाराज ? आपको मेरा प्रणाम है महाराज। मुझे····मुझे विरोधीलालजीसे मिलना है।

राजा : [गम्भीरतासे] अब तुम विरोधीलालसे कभी नहीं मिल सकते।

मामूलीराम : क्यों महाराज ?

राजा : क्योंकि विरोधीलाल अब सुबोधीलाल हो गया है।

मामूलीराम : [दुःख] यह तो बहुत बुरा हुआ महाराज ! उनके माँ-बापने कितने मनसे उनका नाम विरोधीलाल रखा था। सोचिए तो, जब उनको मालूम होगा तो वे कितने दुखी होंगे !

राजा : हम प्रसन्न हुए मामूलीराम। तुम्हारा संकेत भीड़से है न ? भीड़ ही तो उसकी माँ-बाप थी। उसे दुःख होगा—और होना भी चाहिए।

मामूलीराम : मैं···मैं समझा नहीं महाराज।

राजा : देखो मामूलीराम, अब सब कुछ बिलकुल स्पष्ट है ! विरोधीलालने तुम्हें और भीड़को धोखा दिया है।

गुनुग्मुगं

मामूलीराम : धोखा दिया है ? हे भगवान् !

राजा : तुमने तो स्वयं देखा वह शुतुरनगरोका नया विकासमन्त्री हो गया है।

मामूलीराम : जब आप कह रहे हैं तो जरूर सच होगा लेकिन महाराज आपने इतने धोखेबाज आदमीको मन्त्री बनाया ही क्यों ?

राजा : यह राज-काजकी बातें हैं मामूलीराम। कभी-कभी बाध्य होकर हमें वह सब करना पड़ता है जो हम नहीं चाहते।

मामूलीराम : लेकिन वह सब करना तो आपको अच्छा लगता है, जो आप चाहते हैं।

राजा : हम वही सब तो करते हैं जो हमें अच्छा लगता है।

मामूलीराम : तो फिर बताइए, हमारी माँगें कब पूरी होंगी ?

राजा : क्या तुम्हारी कोई माँगें हैं ?

मामूलीराम : हाँ महाराज, और आप उन्हें सरलतासे पूरा कर सकते हैं।

राजा : हमें उनके बारेमें बतलाओ।

मामूलीराम : सबसे पहली बात तो यह कि हमें दो जूनका भोजन चाहिए। फिर तन ढँकनेको कपड़ा और रहनेको छोटा-सा घर। बस।

राजा : यह सब हम तुम्हें दे सकते हैं।

मामूलीराम : [प्रसन्नतासे] महाराज ?

राजा : हाँ, मामूलीराम, यह सब हम तुम्हें दे सकते हैं। लेकिन तुम्हें भीड़को समझाना होगा। उसे हमारे झण्डेके नीचे लाना होगा। जबतक हमारा सोनेका शुतुरमुर्ग पूरा नहीं हो जाता—तबतक भीड़को शान्त रखना होगा।

मामूलीराम : फिर सबको सब-कुछ मिलेगा ?

राजा : हाँ मामूलीराम ! पर सबसे पहले तुम्हें सब-कुछ मिलेगा ! हमारे शुतुरमुर्गके पूरा होनेसे पहले तुम्हें और बादमें भीड़को।

मामूलीराम : यह शुतुरमुर्ग कहाँ बन रहा है ?

राजा : तुम कितने भोले हो मामूलीराम। सारी शुतुरनगरी जानती है कि हमारा शुतुरमुर्ग कहाँ बन रहा है ?

मामूलीराम : एक दिन मैं भी उसे देखने जाऊँगा। आपने उसे देखा है महाराज ?

राजा : उद्‌घाटनसे पूर्व हम उसे कैसे देख सकते हैं ? और उसका उद्‌घाटन तभी हो सकता है जब भीड़ शान्त रहे और भीड़ तभी शान्त रह सकती है जब तुम उसे समझाओ।

[पृष्ठभूमिमें भीड़का उत्तेजित शोर]

राजा : सुना तुमने वे सब फिर आ गये हैं। वे''''वे काफ़ी उत्तेजित लग रहे हैं। सुना तुमने'''वे फिर शोर मचा रहे हैं।

मामूलीराम : [शान्तिसे] वे सब भूखे और नंगे हैं महाराज तभी तो इतना शोर मचा रहे हैं।

राजा : [क्रोधित] पर क्या हमने यह नहीं कहा कि शुतुरमुर्गके पूरा होनेसे पहले तुम्हारी और बादमें भीड़की माँगें पूरी होंगी।

मामूलीराम : [भोलेपनसे] यह पहले और बादकी बात मेरी समझमें नहीं आती महाराज। हम सबकी ज़रूरतें आप एक साथ पूरी क्यों नहीं कर देते ?

राजा : उसमें समय लगेगा मामूलीराम—समय लगेगा। और यह समय तुम ला सकते हो ?

मामूलीराम : (आश्चर्य) मैं ला सकता हूँ ?

राजा : उफ़् ! हम तुम्हारे स्तरपर उतरकर तुम्हें कैसे समझायें ? मुख्य बात भीड़को शान्त रखनेकी है। हम भीड़को शान्त रखनेके और भी तरीक़े जानते हैं। लेकिन रक्तपात और

दमन हमें प्रिय नहीं। हम इस महान् कार्यमें तुम्हारे व्यक्तित्वका उपयोग करना चाहते हैं। अब हम अपनी बात अन्तिम बार कहेंगे। जब भीड़ शान्त रहेगी तब शुतुरमुर्ग पूरा होगा। जब शुतुरमुर्ग पूरा होगा तब माँगें पूरी होंगी।

मामूलीराम : लेकिन महाराज अगर भीड़ने मेरी बात न मानी तो?

राजा : हाँ, यह प्रश्न भी बड़ा सार्थक है। यदि भीड़ने तुम्हारी बात न मानी तो? [राजा कुछ सोचते हुए सिंहासन तक जाता है, फिर अनायास ही घण्टा बजाता है]

[अचानक पृष्ठभूमिसे ऊँचे स्वरमें रणभेरी बजती है]

मामूलीराम : यह रणभेरी क्यों बज रही है?

राजा : [गम्भीरतासे] ऐसा लगता है कि शुतुरनगरीपर कोई बहुत बड़ा संकट आया है।

मामूलीराम : [भयभीत] बहुत बड़ा संकट आया है?

राजा : हाँ—मामूलीराम ' यह रणभेरी तभी बजती है जब शुतुरनगरीपर कोई महान् संकट आता है।

[अन्दरसे रणभेरी बजाते हुए भाषणमन्त्रीका प्रवेश। वह सामूहिक एकता प्रदर्शित करनेवाला एक मुखौटा लगाये है]

भाषणमन्त्री : [घोषणा] सावधान-सावधान—शुतुरनगरीपर भयानक संकट आया है।

मामूलीराम : आप कौन हैं श्रीमन्त?

राजा : ये भाषणमन्त्री हैं।

मामूलीराम : लेकिन ये मुखौटा क्यों लगाये हैं?

भापणमन्त्री : महाराज ! शुतुरनगरीकी सीमाओंपर राजा रक्तवंशी और रक्तबीजकी सेनाओंका भयंकर जमाव है।

राजा : तो इसका अर्थ यह है कि रक्तवंशी पुनः आक्रमणकी योजना बना रहा है।

भापणमन्त्री : हाँ महाराज, आक्रमण किसी भी क्षण हो सकता है। और इस बार रक्तबीज भी उसके साथ है।

राजा : रक्तबीजको पिछले युद्धमें जो कड़वे घूँट हमने पिलाये—वह शायद उन्हें भूल गया है। शान्ति हमें प्रिय है लेकिन युद्धकी स्थिति आ जानेपर शुतुरनगरी पीछे नहीं हटेगी। युद्धका उत्तर हम युद्धसे देंगे। भापणमन्त्री—हम राष्ट्रके नाम सन्देश प्रसारित करना चाहते हैं।

भाषणमन्त्री : कीजिए महाराज।

राजा : शुतुरनगरी एक भयानक संकटमें है। हमारा बहुमुखी विकास शान्ति और मानवताके शत्रुओंको फूटी आँखों नहीं भा रहा है। वे अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर हमारी स्वतन्त्रताके खिलाफ़ षड्यन्त्र रच रहे हैं। वे हमपर आक्रमण करके हमें पद-दलित करना चाहते हैं। शुतुरनगरीके निवासियोंसे हमारी प्रार्थना है कि वे इस महान् संकटकी पृष्ठभूमिपर अपने कर्तव्य पहचानें इस सम्भावित युद्धका मुक़ाबला करनेके लिए सारा राष्ट्र एक व्यक्तिकी तरह खड़ा हो। [दुःखी स्वर] आगे एक लम्बा और कटु संघर्ष है। हम अपनी प्रजाको कष्ट-आँसू और पीड़ाके अलावा और कुछ भी देनेका वचन नहीं करते। सत्यमेव जयते !

भापणमन्त्री : [तुरही बजाकर घोषणा] सावधान—सावधान। शुतुरनगरीपर भयानक संकट आया है। दो-दो शत्रु हमारे देशपर आक्रमण करने जा रहे हैं। इस सम्भावित युद्धका

मुक़ाबला करनेके लिए सारा राष्ट्र एक व्यक्तिकी तरह खड़ा हो। आगे एक लम्बा और कटु संघर्ष है। हम अपनी प्रजाको कष्ट–आंसू और पीड़ाके अलावा और कुछ भी देनेका वचन नहीं करते। सावधान–सावधान— !

[यही कहते हुए भाषणमन्त्रीका प्रस्थान। धीरे-धीरे उसका स्वर पृष्ठभूमिमें विलीन होने लगता है।]

राजा : अगर शुतुरनगरी है तो हम हैं, शुतुरनगरी न रही तो हम भी न रहेंगे।

[रक्षामन्त्रीका प्रवेश। वह सामूहिक क्रोध प्रकट करनेवाला एक मुखौटा लगाये तथा युद्ध वेषमें है।]

रक्षामन्त्री : शुतुरनगरी सदैव रहेगी महाराज।

मामूलीराम : आप कौन हैं श्रीमन्त ?

राजा : ये रक्षामन्त्री हैं मामूलीराम। यह मुखौटा हमारे राष्ट्रके सामूहिक क्रोधका प्रतीक है। क्या समाचार है रक्षामन्त्री ?

रक्षामन्त्री : महाराजकी जय हो। आक्रमणकारियोंका सामना करनेके लिए सभी प्रबन्ध हो चुके हैं। सारा देश एक अभेद्य दुर्गकी तरह अपने संकल्पोंपर दृढ़ है। आज सारी शुतुरनगरी क्रोधित है महाराज। यदि शत्रुने आक्रमण करनेका प्रयास किया तो उसे हमारे सामूहिक क्रोधकी ज्वालाएँ भस्म कर देंगी। सत्यमेव जयते।

[रक्षामन्त्रीका प्रस्थान। क्षणिक विराम]

मामूलीराम : अब हमारी मांगोंका क्या होगा, महाराज ?

राजा : [क्रोधित] तुम्हे शर्म आनी चाहिए मामूलीराम। इतना भयंकर संकट और तुम्हे अपनी इन क्षुद्र मांगोंकी चिन्ता है?

मामूलीराम : [सभय] तो फिर मैं जाता हूं महाराज। फिर कभी आऊँगा !

राजा : हम तुम्हारे लौटनेका स्वागत करेंगे मामूलीराम। लेकिन हम तुम्हें वीर वेषमें देखना चाहते हैं मामूलीराम। हम चाहते हैं कि तुम जब दोबारा आओ तो तुम्हारे शरीरपर कवच हो—तुम्हारे हाथोंमें अस्त्र-शस्त्र, आँखोंमें सामूहिक क्रोधकी ज्वालाएँ और राजमहलके सामने खड़ी हुई दिशाहीन भीड़ तुम्हारे नेतृत्वमें हो।

मामूलीराम : [उत्तेजित] यही होगा महाराज। मैं आपको वचन देता हूँ कि देशके लिए मिटनेवालोंमें आपका मामूलीराम सबसे आगे होगा।

[मामूलीराम अभिवादन करता है।]

राजा : हमारा आशीर्वाद है मामूलीराम कि तुम सच्चे अर्थोंमें देशके कर्णधार बनो। अग्नि-परीक्षाओंमें तपकर तुम्हारा व्यक्तित्व खरा निकले और तुम अजेय बनो।

[मामूलीराम पुनः अभिवादन करता है। राजा उसे दाहिना हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है। मामूलीरामके चेहरेपर ऐसे भाव हैं मानो वह जागृत हो रहा है। एक नये आत्मविश्वास और दृढ़ताके साथ मामूलीरामका धीरे-धीरे प्रस्थान। राजा उसे मुसकराता हुआ देखता रहता है।]

[दासीका प्रवेश]

दासी : महाराजकी जय हो।

राजा : क्या समाचार है दासी ?

दासी : महाराज राजपुरोहितजी पधारे हैं।

राजा : राजपुरोहितजी पधारे हैं ? कुशल तो है ?

दासी : राजपुरोहितजी आपके जन्मोत्सवमें भाग लेने आये हैं।

राजा : हमारा जन्मोत्सव ?

दासी : [कमज़ोर आवाज़] हाँ, महाराज। महारानीने एक बहुत बड़े भोजका आयोजन किया है। आप तो जैसे सब-कुछ भूल ही गये।

राजा : [मुसकराकर] राज-काजकी झंझटोंमें हम बहुत-सी महत्त्वपूर्ण बातें भूल जाते हैं। क्या-क्या आयोजन है ?

दासी : सबसे पहले राजपुरोहितजीका आशीर्वचन, फिर चुनी हुई देवदासियोंका नृत्य और गायन और अन्तमें विशाल भोज; इस उत्सवका विशेष आकर्षण एक मंगल-गान है महाराज, जिसे स्वयं महारानीने लिखा है।

राजा : स्वयं महारानीने लिखा है ?

दासी : [एक स्वर्णपत्र देकर] यह देखिए महाराज—स्वर्णपत्रमें वह गान अंकित है, भोजके पश्चात् यह स्वर्णपत्र प्रत्येक अतिथिको उपहारमें दिया जायेगा।

[राजा स्वर्णपत्र पढ़ रहा है]

दासी : चतुरनगरीकी चुनी हुई गायिकाएँ इसका अभ्यास कर रही हैं। उद्यानमें सबको आपकी प्रतीक्षा है।

राजा : [स्वर्णपत्र पढ़कर] ओ युगपुरुष ! स्वीकार करो यह वन्दन।
शताब्दियाँ लिये खड़ी हैं रोली और चन्दन ॥
तुम जियो हज़ारों वर्ष, तुम रहो हज़ारों वर्ष।
युगों तक होता रहे तुम्हारा अभिनन्दन ॥
[मुस्कराते] काव्य···शुद्ध काव्य। हमें प्रसन्नता है कि महारानीने चतुरनगरीका कलामन्त्री पद स्वीकार किया। तुम कविता समझती हो दासी ?

दासी : नहीं महाराज।

राजा : आजसे पहले हम भी नहीं समझते थे। पर तुम्हारी महारानीने हमें काव्यकी महान् शक्तिसे परिचित कराया है।

दासी : [कृश स्वर] शीघ्रता करें महाराज ! सब लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

राजा : [दासीको ध्यानसे देखकर] तुम्हारा स्वर इतना कमजोर क्यों है दासी ?

दासी : [विषयान्तर] कुछ नहीं महाराज। कोई विशेष बात नहीं। कार्यका बोझ है ?

राजा : [कड़े स्वरमें] हम यह नहीं मानते। हमें ठीक बात बतायी जाय।

दासी : [कृश स्वर] महाराज···मैंने···अन्न-जल ग्रहण करना बन्द कर दिया है।

राजा : [आश्चर्य] तुमने अन्न-जल ग्रहण करना बन्द कर दिया है—क्यों ?

दासी : पिछली अमावसको मेरे पिताका पत्र आया था वे सब बहुत कष्टमें हैं।

राजा : कष्टमें हैं ?

दासी : हमारे ग्राममें भयंकर अकाल पड़ा है महाराज।

राजा : अकाल पड़ा है ? लेकिन हमें तो कोई सूचना नहीं।

दासी : सूचना आप तक पहुँची न होगी महाराज ?

राजा : हमें तुमसे सहानुभूति है दासी। हमारी हार्दिक इच्छा है कि तुम सब-कुछ भूलकर तुरन्त अन्न-जल ग्रहण करो।

दासी : [भरे कण्ठसे] मेरे परिवारके लोग भूखे रहे तो मैं अन्न खाकर क्या करूंगी महाराज।

[तभी पृष्ठभूमिसे महारानी-द्वारा रचित मंगलगानके समवेत स्वर उभरते हैं। दासी अपने आँसू पोंछकर अन्दर चली जाती है। राजा चिन्तित है।]

[भाषणमन्त्रीका प्रवेश]

भाषणमन्त्री : महाराजकी जय हो ? शुभ समाचार है महाराज ?

राजा : शुभ समाचार ?

भाषणमन्त्री : हाँ महाराज—जैसे ही राज-द्वारपर जाकर मैंने आपका सन्देश प्रसारित किया वैसे ही मानो दैवी चमत्कार हो गया हो। भीड़ चुपचाप अपने घर चली गयी।

राजा : हम प्रसन्न हैं भाषणमन्त्री। शुतुरनगरीके निवासी अपने महान् कष्टोंको महानताके साथ स्वीकार कर रहे हैं—यह शुभ-चिह्न है।

भाषणमन्त्री : और महाराज एक अशुभ समाचार है।

राजा : अशुभ समाचार ?

भाषणमन्त्री : हाँ महाराज जब भीड़ राजद्वारसे वापस चली गयी तो एक विचित्र बात पायी गयी ?

राजा : विचित्र बात ?

भाषणमन्त्री : लगभग दस नागरिक मरे पड़े थे। द्वारपालका कहना है कि वे भूख लगनेसे मर गये।

राजा : भूख लगनेसे मर गये ? परन्तु वे अपने घर भोजन करने भी तो जा सकते थे।

भाषणमन्त्री : महाराज द्वारपाल कहता है कि उनका कोई घर ही नहीं है।

राजा : [क्रुद्ध] तो फिर वे कहीं औरसे भोजन कर आते और पुनः राजद्वारके सामने खड़े हो जाते।

भाषणमन्त्री : महाराज—द्वारपाल कहता है कि शुतुरनगरीमें भोजन समाप्त हो गया है।

राजा : हमें दुःख है भाषणमन्त्रीजी कि अब आप द्वारपालोंकी बात-पर काफ़ी विश्वास करने लगे हैं। हम तो यह जानना चाहते थे कि स्वयं आप क्या कहते हैं ?

भापणमन्त्री : हमारे पास तो अभी पर्याप्त खाद्य सामग्री है महाराज !

राजा : हम आपसे सहमत हैं। हमें ऐसा लगता है कि कुछ अनाम व्यक्तियोंने आत्महत्या की है और अब भूखसे मरनेवाला यह नाटक प्रचारित किया जा रहा है। भाषणमन्त्री— हम चाहते हैं कि आप तुरन्त जनसाधारणमें इस राष्ट्रीय षड्यन्त्रका भण्डाफोड़ करें।

[अन्दरसे विरोधीलालका प्रवेश]

विरोधीलाल : महाराजकी जय हो।

राजा : आइए सुबोधीलालजी।

विरोधीलाल : अपने जन्म-दिवसपर हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिए महाराज।

राजा : शुभकामनाओंके लिए हम आभारी हैं सुबोधीलालजी। लेकिन हमें भय है कि हम अपने जन्मोत्सवमें भाग न ले सकेंगे।

विरोधीलाल : क्यों महाराज ?

राजा : अभी कुछ अशुभ संकेत हमें मिले, शुतुरनगरीके निवासी कष्टमें हैं। राष्ट्रकी सीमाओंपर शत्रु-दल सक्रिय हैं। ऐसी दशामें यह समारोह हमें उचित नहीं जान पड़ता।

भाषणमन्त्री : परन्तु महाराज, महारानीको जब यह मालूम होगा तो वे बहुत दुखी होंगी। सोचिए तो उन्होंने कितने श्रमसे उत्सवकी तैयारी की है।

राजा : हमें महारानीके दुःखकी भी चिन्ता है। हम यह सोच रहे हैं कि महोत्सवसे सम्बन्धित किसी कार्यक्रममें हम भाग न लें—पर उन्हें पूर्ववत् चलने दें।

भाषणमन्त्री : यही उचित रहेगा महाराज।

शुतुरमुर्ग

राजा : ठीक है—आप यह प्रसारित कर दीजिए कि राष्ट्रीय संकटको देखते हुए महाराजने अपने जन्मदिनके समारोहमें भाग लेनेसे इनकार कर दिया है।

भाषणमन्त्री : सूचनाएँ प्रसारित होनेमें शीघ्रता हो—इस दृष्टिसे मैंने प्रसारणकर्ताओंका जाल बिछा दिया है महाराज—अब इसी कक्षसे यह सब हो सकेगा [ऊँचे स्वरमें] राष्ट्रीय संकटको देखते हुए महाराजने अपने जन्मोत्सवमें भाग लेनेसे इनकार कर दिया है। [तुरन्त ही पृष्ठभूमिमें एक पुरुष कण्ठ यही दोहराता है—फिर कुछ दूरीसे दूसरा—फिर तीसरा]

[अन्तर्मुख-सा] अब हम केवल उस दिन समारोहमें भाग लेंगे जिस दिन शुतुरमुर्गका उद्घाटन होगा।

विरोधीलाल : शुतुरमुर्गका उद्घाटन होनेमें अब देर नहीं महाराज। मैं स्वर्णछत्रकी स्थापना करने जा रहा हूँ। [एक राजकीय आज्ञापत्र निकालकर] आप यहाँ हस्ताक्षर कर दीजिए महाराज।

राजा : [पढ़कर] परन्तु दो सहस्र स्वर्णमुद्राएँ तो बहुत अधिक हैं।

विरोधीलाल : पिछले विकासमन्त्रीने चार सहस्र-मुद्राओंकी स्वीकृति ली थी, यह तो केवल उसका आधा है।

राजा : ठीक है—हमें स्वीकार है। [हस्ताक्षर करता है]

विरोधीलाल : [आज्ञा-पत्र लेकर] महाराजकी जय हो।

[विरोधीलालका प्रस्थान]

भाषणमन्त्री : दो सहस्र स्वर्ण मुद्राएँ तो बहुत अधिक हैं महाराज।

राजा : हम जानते हैं लेकिन सुबोधीलालके लिए यह हमारी पहली स्वीकृति थी। हम इनकी उपयोगिता देख रहे हैं

और उनकी उपयोगिता इस बातपर निर्भर है कि अब उनमें भीड़को प्रभावित करनेकी कितनी क्षमता है ?

भाषणमन्त्री : परन्तु भीड़को प्रभावित करनेका कार्य तो अब हम स्वयं अधिक कुशलतासे कर रहे हैं।

राजा : राजनीतिमें सभी तथ्य एक साथ नहीं स्पष्ट हो जाते भाषण-मन्त्री। हम सुबोधीलालका विघटन करेंगे—लेकिन पूरे मूल्यांकनके बाद। अस्तु यह स्वीकृति [भीड़का शोर उभरता है] यह तो भीड़का शोर है। समझमें नहीं आता कि ये बार-बार क्यों आ जाते हैं ? भाषणमन्त्री सूचनाएँ प्रसारित कीजिए।

भाषणमन्त्री : [ऊँचे स्वरमें] शुतुरनगरीके निवासियो—सावधान ! कुछ व्यक्तियोंके भूखसे मरनेका समाचार निराधार है।

[यह स्वर पहलेकी तरह पृष्ठभूमिमें प्रतिध्वनित होते हुए विलीन हो जाता है।]

भाषणमन्त्री : शुतुरनगरीपर युद्धके बादल मँडरा रहे हैं। हमें सब कुछ भूलकर इस लम्बे और कटु संघर्षका सामना करनेकी तैयारी करनी चाहिए। [पृष्ठभूमिमें स्वरोंकी पुनरावृत्ति होती है]

[महामन्त्रीका प्रवेश]

महामन्त्री : देशमें युद्धोन्माद उत्पन्न करना ठीक नहीं है महाराज।

राजा : [शान्तिसे] हम उन्माद नहीं उत्पन्न कर रहे हैं। हम तो शुतुरनगरीके निवासियोंको सम्भावित युद्धकी अग्रिम सूचना-भर दे रहे हैं।

महामन्त्री : लेकिन आपकी सूचनाओंका प्रस्तुतीकरण बहुत तीव्र है। तीव्र समाचारोंकी प्रतिक्रिया भी तीव्र होती है महाराज।

राजा : तो क्या आप यह स्वीकार नहीं करते कि शत्रु हमारे देश-पर आक्रमण करना चाहते हैं ?

महामन्त्री : यह बात मैं खुले दिलसे स्वीकार करता हूँ।

राजा : और यह युद्ध कल हो सकता है।

महामन्त्री : हो सकता है।

राजा : आज हो सकता है।

महामन्त्री : सम्भव है।

राजा : अभी और इसी क्षण।

महामन्त्री : यह भी सम्भव है।

राजा : [कौतुकसे] अब मान लीजिए कि युद्ध कल होने जा रहा है और हम उसकी सूचना इसी क्षण दे दें—तो इसमें हानि क्या है ?

महामन्त्री : युद्ध एक अनिवार्य सम्भावना है महाराज। हुए हैं और होंगे। लेकिन इन्हे राष्ट्रीय चर्चाका विषय बनाकर अपनी सुविधाके लिए मोड़ना क्या उचित है ?

राजा : महामन्त्रीजी—हमें शान्ति चाहिए। अब यह शान्ति हमें युद्धसे मिले या शान्तिसे, हमें किसी भी मूल्यपर चाहिए ताकि हमारे परम सत्यका प्रतीक शुतुरमुर्ग स्थापित हो सके।

[रक्षामन्त्रीका प्रवेश]

रक्षामन्त्री : महाराजकी जय हो ?

राजा : राजदरबारपर यह कैसा शोर है रक्षामन्त्री।

रक्षामन्त्री : महाराज, मामूलीराम पुनः लौट आया है।

राजा : मामूलीराम पुनः लौट आया है ?

रक्षामन्त्री : हाँ, महाराज ! भीड़ने उसे अपना नेता चुन लिया है।

वह भीड़के सामने गम्भीरतासे भाषण दे रहा है। वह कह रहा है कि भूखसे मरनेवाले समाचार सच हैं।

राजा : [सोचनेका प्रयास] इस मामूलीरामको अचानक यह क्या हो गया ?

महामन्त्री : यह अचानक नहीं हुआ है महाराज। मामूलीराम तो सभी घटनाओंका स्वाभाविक अन्त है।

राजा : क्या मतलब ?

महामन्त्री : यह मामूलीरामके व्यक्तित्वका पहला विस्फोट है।

राजा : [गम्भीरतासे] हूँ, तो इसका अर्थ यह है कि भीड़का हमें दमन करना होगा।

महामन्त्री : और भूख ? उसके बारेमें क्या सोचा है ?

रक्षामन्त्री : हाँ, महाराज ! इस समस्याका समाधान होना आवश्यक है।

राजा : समस्याओंसे आप लोग इतना आतंकित क्यों हैं ? क्या हमने नहीं कहा था समस्याएँ स्वयं अपना समाधान होती हैं। हम शुतुरनगरीके महाराज इसी क्षण एक जाँच समितिके निर्माणकी घोषणा करते हैं। इस समितिकी अध्यक्षा स्वयं महारानी होंगी। वे एक कलात्मक विवरण हमें इस तथाकथित भुखमरीपर देंगी। सज्जनो, आप देखेंगे—हम क्षण मात्रमें इस समस्याका हल कर देंगे। भाषणमन्त्री—सूचनाएँ। हम स्वयं महारानीको आदेश देने जा रहे हैं।

[राजाका प्रस्थान]

भाषणमन्त्री : भुखमरीकी जाँचके लिए शुतुरनगरीकी कलामन्त्री नियुक्त कर दी गयी हैं। सचाई मालूम होते ही समस्या हल कर

दी जायेगी। [पृष्ठभूमिमें सूचनाएँ प्रसारित होती हैं, अन्तिम स्वरके साथ भीड़का शोर पुनः उभरता है]

रक्षामन्त्री : कितनी विचित्र बात है—हमारे देखते-देखते मामूलीराम महत्त्वपूर्ण हो गया।

भाषणमन्त्री : एक दृष्टिसे तो हो ही गया है।

रक्षामन्त्री : एक दृष्टिसे क्यों ?

भाषणमन्त्री : जन-दृष्टिसे वह महत्त्वपूर्ण है—और राजकीय दृष्टिसे होते-होते रह गया।

रक्षामन्त्री : क्या मतलब ?

भाषणमन्त्री : मतलब यह कि राजकीय दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण होनेके लिए महाराजके साथ एकान्तमें रुकना बहुत आवश्यक है। एक बार विरोधीलाल रुका तो सुबोधीलाल हो गया—इसलिए जब मामूलीरामने महाराजके साथ अधिक समय लगाया तो मुझे युक्तिसे काम लेना पड़ा ?

महामन्त्री : युक्तिसे काम लेना पड़ा ?

भाषणमन्त्री : और क्या ? मैंने सोचा कि महाराज यदि इसी प्रकार विरोधियोंका परिवर्तन सुबोधियोंमें करते रहे तो हम सबका भविष्य अन्धकारमें परन्तु तभी मुझे महाराजका संकेत मिला।

महामन्त्री : महाराजका संकेत मिला ?

भाषणमन्त्री : [मुसकराकर] हाँ, महामन्त्रीजी और उनका संकेत मिलते ही मैंने मामूलीरामके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर दी।

रक्षामन्त्री : आपने ठीक ही किया भाषणमन्त्रीजी। हमारे लिए इससे बड़ा संकट और क्या हो सकता था। उधर महाराजने

आज्ञा दे दी है। मामूलीराम नामके इस व्यक्तिका हम समूल नाश कर देंगे।

महामन्त्री : मामूलीराम—एक व्यक्तिका नाम नहीं रक्षामन्त्री—वह एक सामूहिक भावनाका नाम है। इस भावनाका दमन युद्धसे नहीं केवल प्रेमसे सम्भव है। हम मामूलीरामको प्रेम करना सीखें और उसकी समस्याओंको दूर करना।

रक्षामन्त्री : यदि महाराजको मालूम हो गया कि हम मामूलीरामको प्रेम कर रहे हैं तो अनर्थ हो जायेगा।

महामन्त्री : इसी अनर्थमें अब हमारा कल्याण है।

भापणमन्त्री : अगर हमारा कल्याण निश्चित हो तब तो सोचना पड़ेगा।

रक्षामन्त्री : मैं आपसे सहमत हूँ भापणमन्त्रीजी।

महामन्त्री : अब प्रश्न यह है कि मामूलीरामकी सबसे बड़ी समस्या क्या है?

भापणमन्त्री : भूख।

महामन्त्री : नहीं भापणमन्त्री। महाराज और मामूलीराम, इन दोनोंकी सबसे बड़ी समस्या शुतुरमुर्ग है। यदि किसी प्रकार हम इस शुतुरमुर्गको तोड़ सकें तो बात बन सकती है। इस कार्यमें हम सुबोधीलालका सहयोग भी ले सकते हैं।

भापणमन्त्री : लेकिन अब तो शुतुरमुर्गके उद्घाटनका समय निकट आ रहा है। [मुसकराकर] सुबोधीलालजी महाराजसे दो सहस्र मुद्राएँ लेकर उसपर स्वर्णछत्रकी स्थापना करने गये हैं।

रक्षामन्त्री : और सुबोधीलाल हमारे प्रस्तावका विरोध भी कर सकता है?

महामन्त्री : विरोध करना सुबोधीलालका स्वभाव नहीं रक्षामन्त्री—

शुतुरमुर्ग

उसकी आवश्यकता है। यदि उसकी आवश्यकताओंकी पूर्ति होती है तो वह निश्चित ही हमारा साथ देगा।

आपणमन्त्री : लेकिन महाराजका क्या होगा? शुतुरमुर्ग तोड़नेकी योजनासे तो वह स्वयं टूट जायेंगे।

महामन्त्री : इस समय महाराजकी चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं। देश सर्वोपरि है। मामूलीरामको सन्तुष्ट करके ही स्थितियों-पर नियन्त्रण पाया जा सकता है। और मामूलीराम तभी सन्तुष्ट हो सकता है जब शुतुरमुर्ग टूटे। मैं राजद्वारपर सुबोधीलालकी प्रतीक्षा करने जा रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि शुतुरमुर्ग तोड़नेवाली बात उसने भी सोची होगी।

आपणमन्त्री : लेकिन वह तो स्वर्णक्षत्रकी स्थापना करने गया है। वह ऐसी बात कैसे सोच सकता है?

महामन्त्री : महान् प्रतिभाएँ सदैव एक-सा सोचती हैं।

[महामन्त्रीका प्रस्थान—दासीका प्रवेश]

दासी : सावधान, सावधान... जाँच-समितिकी अध्यक्षा शुतुर-नगरीकी कलामन्त्री—महारानी पधार रही हैं।

[महारानीका मुस्कराते हुए प्रवेश—दासी और मन्त्रि-गण सादर झुकते हैं]

रानी : महाराजने आज्ञा दी है कि मैं भूख-समस्यापर एक सुन्दर और सही विवरण लिखकर उन्हें दूँ। इस कार्यमें मुझे आप लोगोंकी सहायता चाहिए।

रक्षामन्त्री : आज्ञा दीजिए महारानी। हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?

रानी : [सत्संकोच] मैंने तो कभी भूखसे मरता हुआ आदमी देखा नहीं है। अतः मेरी प्रार्थना है कि मुझे एक ऐसा मनुष्य ला दीजिए।

भाषणमन्त्री : आप आज्ञा दीजिए। महारानी एक क्या यदि आप कहें तो हम एक सहस्र भूखसे मरते व्यक्ति एकत्र कर दें।

रानी : नहीं, मेरा कार्य केवल एक व्यक्तिसे चल जायेगा। कहीं कोई विवाद न खड़ा हो जाय इसलिए आप दोनों ही इस कार्यको गुप्त रूपसे कर दें।

रक्षामन्त्री : हम स्वयं ही यह कार्य करेंगे महारानी।

रानी : धन्यवाद भाषणमन्त्रीजी। पर इतना अवश्य देख लीजिएगा कि लाया जानेवाला व्यक्ति भूखसे ही मर रहा हो—उसे कोई और व्याधि या रोग न हो।

भाषणमन्त्री : हम अच्छी तरह ठोंक-बजाकर देख लेंगे महारानी।

[दोनों मन्त्रियोंका तेज़ीसे प्रस्थान]

रानी : दासी ?

दासी : महारानी।

रानी : क्यों री ? तू इतनी आतंकित क्यों है ?

दासी : [सभय] कुछ नहीं महारानी''''कुछ नहीं।

रानी : तू अपनी स्वामिनीसे झूठ बोलती है—बता न क्या बात है ?

दासी : [विषयान्तर] अतिथियोंको स्वर्णपत्र बाँट आऊँ—महारानी ?

रानी : अभी तो अतिथि भोजन कर ही रहे हैं। वहाँसे निपटकर स्वर्णपत्र बाँटनेका कार्य तो मैं स्वयं करूँगी। सुन, तूने कभी भूखसे मरता हुआ मनुष्य देखा है ?

दासी : [अचकचाकर] जी हाँ'''महारानी''''देखा है ?

रानी : [निकट आकर] देखा है ? [प्रसन्नतासे] कहाँ री ? कब ? कैसे ? मुझे बता न ?

गुनुरमुंगा

दासी : [भरे कण्ठसे] बहुत समय पहलेकी बात है—तब मैं बहुत छोटी थी। मेरे गांवमें भयंकर अकाल पड़ा था।

रानी : [बाल-सुलभ उत्सुकताके साथ] अच्छा ?

दासी : सारे नदी-पोखर सूख गये।

रानी : फिर क्या हुआ ?

दासी : सारा अन्न समाप्त हो गया।

रानी : अच्छा ?

दासी : हां महारानी। लोगोंके शरीरसे मांस विलीन हो गया, भूखकी ज्वालाओंसे उनके पेटमें गड्ढे पड़ गये। बैठने-वाले उठ नहीं पाये, उठनेवाले बैठ नहीं पाये और वे सब जीवित प्रेतोंकी तरह मुरदोंकी नगरीमें पड़े-पड़े मौतकी प्रतीक्षा करते रहे।

रानी : [उत्सुकताकी चरम सीमा] फिर क्या हुआ ?

दासी : और फिर वे मरने लगे।

[रानी दासीको प्रसन्नतासे गले लगाती है]

रानी : तू कितनी भाग्यशालिनी है, तूने यह सब देखा है। मेरी मनःस्थिति तो आज ठीक वैसी ही है जैसे मैं जीवनकी पहली परीक्षा देने जा रही हूं। तेरा वर्णन तो एकदम सजीव है, इस विवरणको लिखनेमें मेरी सहायता करेगी ?

दासी : नहीं महारानी ?

रानी : क्यों ?

दासी : भूखसे मरनेवाला आदमी मुझसे देखा नहीं जायगा।

रानी : पर तू एक बार तो देख चुकी है।

दासी : तब मैं छोटी थी महारानी। बिलकुल अबोध। लेकिन अब ···अब···मुझसे मरता हुआ मनुष्य नहीं देखा जायगा महारानी : [दासी रुलाईपर नियन्त्रण करके अन्दर भाग

त्रुरमुर्गं

जाती है। रानी हँसती है। दूसरी ओरसे रक्षामन्त्री और मापणमन्त्रीका प्रवेश। वे एक खाट पकड़े हैं, जिसपर एक वृद्ध लेटा है और अचेत है। रानी उसे उत्सुकतासे देखती है। वे खाट सिंहासनके नीचे रखते हैं]

रानी : [प्रश्न] कहाँ मिला ?

मापणमन्त्री : यहीं, राजद्वारके पास।

रानी : सही व्यक्ति है न ?

मापणमन्त्री : हमने पूरी जांच-पड़ताल कर ली है।

रानी : लेकिन इसकी आँखें क्यों बन्द हैं ?

मापणमन्त्री : भूखकी पीड़ासे अचेत है।

रानी : अचेत है—पर कहीं मर न गया हो।

मापणमन्त्री : हमने यह भी ठीकसे देख लिया है। यह मरा हुआ आदमी नहीं'''मरता हुआ आदमी है।

रानी : बहुत-बहुत धन्यवाद। अब मैं अपना कार्य प्रारम्भ करूँ ?

[रानी लेखनी उठाती है]

मापणमन्त्री : अभी आपको थोड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

रानी : प्रतीक्षा करनी पड़ेगी ?

मापणमन्त्री : हाँ महारानी। यह व्यक्ति मरनेसे पहलेकी स्थितिमें है। जबतक यह अन्तिम बार. आँखें नहीं खोलता, तबतक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

रानी : [विवशतासे] तो आइए हम लोग प्रतीक्षा करें।

[रानी वहीं सिंहासनके नीचे बैठ जाती है। दोनों मन्त्री एक कोनेमें खड़े हो जाते हैं। तीनों उत्सुकता और आशान्वित नेत्रोंसे मरते हुए आदमीको देखते हैं] क्षण-भर के विरामके बाद—मरते हुए आदमीमें कुछ हरकत होती

शुरू हुई

है। और वह धीरे-धीरे उठकर बैठता है। फिर इधर-उधर देखता है।

रानी : [प्रसन्नतासे चीखकर] उसने आँखें खोल दीं—उसने अन्तिम बार आँखें खोल दीं।

[रानी अपनी लेखनी सँभालती है। वृद्ध फिर अचेत हो जाता है]

रानी : [क्रोधित] दुष्ट कहींका।

भाषणमन्त्री : महारानी। मरते हुए व्यक्तिसे मीठे वचन बोलना, शिष्टाचार है।

रानी : [प्रेमसे] ए मरते हुए मनुष्य। तुम सचमुच महान् हो। तुम्हारा जीवन धन्य है कि तुम महाराजके काम आ रहे हो। सोचो तो, तुमपर हम कितना महान् परीक्षण कर रहे हैं। परीक्षणकी सफलता एक बहुत बड़ी समस्याका हल होगी—और इसका श्रेय और सम्मान तुम्हें मिलेगा। लेकिन ऐसा हो सके इसलिए आँखें तो खोलो—

[वृद्ध अपनी आँखें खोलता है]

उठकर बैठो…उठकर बैठो…

[वृद्ध उठकर बैठता है]

बोलो…कुछ बोलो…।

[वृद्ध कुछ अस्फुट स्वरोंमें कहता है। उसके शब्द सुनाई नहीं पड़ते। रानी और दोनों मन्त्री कान लगाकर सुनने-की कोशिश करते हैं। रानी तुरन्त कुछ लिखती है]

अब खड़े हो जाओ…शाबाश…हिम्मत करो। [वृद्ध खड़ा हो जाता है, स्थिर, जकड़ा-सा। रानी कुछ लिखती है] अब धीरे-धीरे अपने पैर उठाओ…चलो…

[रानी कुछ दूर जाकर खड़ी हो जाती है।]

मेरे पास आओ...आओ...आओ मेरे पास।

[वृद्ध डगमगाते पैरोंसे आगे बढ़ता है। रानी उसे चलने-के लिए बराबर उत्साहित करती जाती है—और कुछ लिखती जाती है। वृद्ध उसके निकट पहुँच जाता है]

बस—अब लौट जाओ—जाओ।

[वृद्ध सिर झुकाकर खाट तक आता है, रानी कुछ लिखती है] बैठो।

[वृद्ध बैठता है—रानी लिखती है]

लेट जाओ—

[वृद्ध लेटता है—रानी लिखती है]

अब आँख बन्द कर लो और मर जाओ।

[वृद्ध आँखें बन्द कर लेता है—रानी लिखती है। वृद्धका सिर एक ओर लटक जाता है। दोनों मन्त्री उसकी नाड़ीकी परीक्षा करते हैं]

ज्ञापणमन्त्री : अन्त हो गया।

[दोनों मन्त्री निरपेक्ष भावसे खाटको उठाकर बाहर ले जाते हैं]

रानी : [प्रसन्नतासे चीखकर] अन्त हो गया...[लिखती है] अन्त हो गया। मरते हुए महामानवके महाकाव्यका अन्त हो गया! [रानी अपने विवरणमें कुछ संशोधन करती है और वही पंक्ति दोहराती है। क्षण-भर बाद बाहरसे दोनों मन्त्रियोंका प्रवेश। रानी उनको देखकर भयानक रोने लगती है]

ज्ञापणमन्त्री : [आश्चर्य] आपको तो प्रसन्न होना चाहिए महारानी। आप...आप...रो क्यों रही हैं?

रानी : [आँसू पोंछकर] मैं तो भूल ही गयी थी भाषणमन्त्री। मरनेके बाद रोना शिष्टाचार है।

[दासीका प्रवेश]

दासी : सावधान—सावधान—शुतुरनगरीके महाराज पधार रहे हैं।

[रानी और दोनों मन्त्री आदरसे झुकते हैं। राजाका प्रवेश]

राजा : [मुसकराकर] हमें विश्वास है जांच-समितिकी अध्यक्षा अपना कार्य कर चुकी है।

रानी : विवरण प्रस्तुत है महाराज।

[रानी सादर विवरण-पत्र महाराजको देती है]

राजा : हम प्रसन्न हैं महारानी कि इतने आवश्यक कार्य छोड़कर आपने इस विवरणको तैयार करनेमें हमारी सहायता की [विवरण-पत्र उलट-पलटकर] ओह। इतना सुन्दर जांच-पत्र—यह रंग-बिरंगी शुतुरलेखनी, स्वर्ण अक्षरोंकी यह स्याही। महारानी, हमें प्रसन्नता है कि आपने विवरण इतना आकर्षक बना दिया है।

रानी : भूख और मृत्युको मेरी कलाने आकर्षक बना दिया है महाराज। अब आप मूल समस्याको तुरन्त पहचान सकेंगे।

राजा : हमें विश्वास है। अब हम मूल समस्याका तुरन्त समाधान भी कर सकेंगे।

[दासीका प्रवेश]

दासी : भोज समाप्त हो गया है महारानी। अतिथि आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

[रानी और दासीका प्रस्थान—राजा एक बार गिरगिटको सरसरी नज़रसे देखता है]

राजा : [गम्भीरतासे] तो मनुष्य पेटमें भूख लगनेसे मर रहे हैं।

भाषणमन्त्री : आपका अनुमान सही है महाराज।

राजा : हूँ, तो इसका अर्थ यह है कि भूख एक शारीरिक स्थिति है।

भाषणमन्त्री : यह भी सही है महाराज।

राजा : और यदि हम किसी प्रकार इस शारीरिक स्थितिको हल कर सकें तो समस्या हल हो जायेगी।

भाषणमन्त्री : बिलकुल समाप्त हो जायेगी।

राजा : [गम्भीरतासे] हम शुतुरनगरीके महाराज, यह घोषणा करते हैं कि अब इस क्षणसे हमारे देशमें भूखकी परिभाषा बदल गयी।

भाषणमन्त्री : [साश्चर्य] भूखकी परिभाषा बदल गयी ?

राजा : हाँ भाषणमन्त्री। भूख अब एक शारीरिक स्थिति नहीं बल्कि मनःस्थिति मानी जायगी। पेटमें भूख लगकर मरनेका राज्य जिम्मेदार है—परन्तु मस्तिष्कमें भूख लगनेका नहीं। और चूँकि हमारी घोषणाके अनुसार भूख सिर्फ़ मस्तिष्कको लग सकती है। अतः इस नयी परिभाषाके अनुसार सदैवके लिए भूख-समस्याका अन्त—सत्यमेव जयते।

[दोनों मन्त्री अवाक् रह जाते हैं]

भाषणमन्त्री, सूचनाएँ प्रसारित की जायँ।

भाषणमन्त्री : [घोषणाके स्वरमें] शुतुरनगरीके महाराजकी आज्ञासे भूख अब एक शारीरिक स्थिति नहीं है। परिभाषा बदल जानेके कारण उसे मनःस्थिति कहा जायगा।

[सूचनाएँ प्रसारित होती हैं]

शुतुरमुर्ग

भाषणमन्त्री : क्षमा करें महाराज। क्या परिभाषाओंका परिवर्तन समस्या हल कर सकेगा ?

रक्षामन्त्री : भाषणमन्त्रीने बड़ा सार्थक सवाल पूछा है महाराज।

राजा : समस्याएँ हल होना भविष्यकी प्रतिक्रियापर निर्भर है भाषणमन्त्री। और हमें भविष्यकी चिन्ता नहीं। हमें तो केवल वर्तमान प्रिय है। वर्तमान जो हमारा अपना है। जिसे हम जी रहे हैं। वर्तमान ! जिसमें हमारा सोनेका शुतुरमुर्ग बन रहा है और स्वर्णछत्रकी स्थापना हो रही है।

[पृष्ठभूमिमें भीड़का शोर उभरता है—दासीका प्रवेश]

दासी : [भयभीत] महाराजकी जय हो !

राजा : क्या समाचार है दासी ?

दासी : द्वारपालने समाचार भेजा है महाराज। राजमहलके सामने खड़ी हुई भीड़ बहुत क्रुद्ध हो गयी है। कोई बड़ा उत्पात होनेकी आशंका है।

[दासीका प्रस्थान]

राजा : रक्षामन्त्री !

रक्षामन्त्री : महाराज !

राजा : स्थितिको नियन्त्रणमें लाया जाय।

[महामन्त्री और विरोधीलालका प्रवेश]

महामन्त्री : स्थितियाँ अब नियन्त्रणके बाहर चली गयी हैं महाराज !

राजा : महामन्त्री—!

महामन्त्री : और अब इन बिगड़ी हुई स्थितियोंको परिभाषा बदलकर भी ठीक नहीं किया जा सकता—महाराज !

राजा : परम सत्यवादी महामन्त्री, आप जीवनभर कटु सत्य कहते रहे और हम उनका आदर करते रहे। अब आज ज

शुतुरमुर्गपर स्वर्णछत्रकी स्थापना हो रही है और उसके उद्‌घाटनकी तिथि निकट है—आपको कमसे कम एक प्रिय सत्य बोलना चाहिए।

महामन्त्री : सत्य सदैव कटु होता है महाराज ! लेकिन मैं आज आपकी सुविधाके लिए एक प्रिय सत्य बोलूँगा।

राजा : हम प्रसन्न हुए महामन्त्री।

महामन्त्री : [गम्भीरतासे] शुतुरमुर्ग टूट रहा है।

राजा : शुतुरमुर्ग टूट रहा है ? कौन तोड़ रहा है उसे ? किसने ऐसा दुस्साहस किया ? कौन है वह ?

महामन्त्री : [शान्तिसे] मामूलीराम।

राजा : मामूलीराम [राजा अचानक हँसता है] यही है आपका प्रिय सत्य ?

महामन्त्री : यह मेरा दुर्भाग्य है महाराज कि आपने और देशने मुझे हमेशा कटु सत्य बोलनेको मजबूर किया। पर इसे अपना सौभाग्य मानकर आज मैंने अन्तिम सत्य बोला है।

राजा : अन्तिम क्यों ?

महामन्त्री : क्योंकि बदली हुई परिभाषाओंके इस देशमें अब और कब-तक हमारा अस्तित्व सुरक्षित रहेगा ?

राजा : जबतक हम उसे रख सकेंगे।

महामन्त्री : हम उसे कबतक रख सकेंगे ?

राजा : जबतक वह रहेगा।

महामन्त्री : महाराज—अब और अधिक भागनेकी आवश्यकता नहीं। शुतुरनगरीकी स्थिति गम्भीर है। हमें कुछ-न-कुछ तुरन्त करना होगा।

भाषणमन्त्री : यदि हमने कुछ न किया महाराज तो अनर्थ हो जायेगा।

विरोधीलाल : वह सब कुछ जो हमें इतने त्याग और बलिदानके पश्चात् मिला है मिट्टीमें मिल जायेगा।

रक्षामन्त्री : हमारा सर्वनाश हो जायेगा।

राजा : पर जो सर्वोत्तम है हम वही तो कर रहे हैं, हम और क्या कर सकते हैं ?

महामन्त्री : हम शुतुरमुर्ग़ तोड़ सकते हैं।

राजा : [चीखकर] महामन्त्री !

महामन्त्री : शुतुरनगरीके एकमात्र सत्यवादीकी हैसियतसे मैं जो कहूँगा सच कहूँगा, पूरा सच कहूँगा और सचके सिवा कुछ न कहूँगा। महाराजसे लेकर मामूलीराम तककी यात्रा करने-पर सिर्फ़ एक निष्कर्ष मेरे हाथ लगा है। आप दोनोंकी समस्या एक है। वही शुतुरमुर्ग़। दरअसल हमारे देशमें सिर्फ़ एक समस्या है। शुतुरमुर्ग़। आप सोनेका शुतुरमुर्ग़ बनवानेपर लगे हैं और मामूलीराम उसे तुड़वानेपर। कोई भी महान् परिवर्तन अब इन दोनों स्थितियोंमें समझौता करनेसे ही सम्भव है। यदि हम स्वयं शुतुरमुर्ग़ तोड़ दें तो भीड़का खोया हुआ विश्वास हमें फिर मिल सकता है।

राजा : लेकिन हम उसे कैसे तोड़ सकते हैं ? आप सब तो जानते ही हैं कि हम उसे तोड़नेकी आज्ञा क्यों नहीं दे सकते। सज्जनो, क्या आप चाहते हैं कि हमारा युग-युगान्तरका स्वप्न जो एक सोनेकी सुन्दर प्रतिमामें ढल चुका है, टूट जाये ? क्या हमारे परम सत्यका प्रतीक शुतुरमुर्ग़ विघटित हो जाये ?

महामन्त्री : महाराज ! यह भावनाओंमें डूबनेका समय नहीं। हमें ठोस धरातलपर खड़े होकर कुछ निर्णय करने हैं।

राजा : हम और कोई भी निर्णय लेनेको तैयार हैं लेकिन शुतुरमुर्ग नहीं । महामन्त्री, हम अपने शुतुरमुर्गसे सम्बन्धित कोई बात नहीं सुनना चाहते ।

महामन्त्री : क्या आपका शुतुरमुर्ग सदैव जीवित रहेगा ?

राजा : हाँ, महामन्त्री, वह सदैव जीवित रहेगा ।

महामन्त्री : क्यों, क्या वह अमर है ?

राजा : नहीं महामन्त्री शुतुरमुर्गका दर्शन अमर है । कोई-न-कोई उत्तराधिकारमें उसे पाता रहेगा, स्वर्ण-प्रतिमाएँ बनती रहेंगी और स्वर्णछत्रकी स्थापनाएँ होती रहेंगी ।

विरोधीलाल : और यदि स्वर्णछत्रकी स्थापना न हुई हो तो ?

राजा : तो पुनः प्रयास किया जायेगा ।

विरोधीलाल : महाराज, स्वर्णछत्रकी स्थापना नहीं हुई है ।

राजा : क्यों ?

विरोधीलाल : देशकी स्थिति देखकर मुझे अपनी योजना बदलनी पड़ी ।

राजा : [व्यंग्यमें] देशकी स्थिति देखकर कोई और योजना बनायी है आपने ?

विरोधीलाल : हाँ महाराज ! शुतुरमुर्गको तोड़नेकी ।

राजा : [चौंककर] विरोधीलालजी ।

रक्षामन्त्री : विरोधीलालजी बिल्कुल ठीक कह रहे हैं, महाराज ।

भाषणमन्त्री : देशका और हम सबका कल्याण इसीमें है कि शुतुरमुर्ग टूट जाये ।

महामन्त्री : महाराज ! हम, आपको और अपने-आपको बचानेका अन्तिम प्रयास कर रहे हैं । शुतुरमुर्गके टूट जानेसे देश एक बार फिर शान्त हो जायेगा—आपकी शक्ति और आपका सिंहासन एक बार फिर सुरक्षित हो जायेगा ।

और हम सबको जीवित रहनेका अवसर एक बार फिर मिल सकेगा।

[राजा चिन्तित हैं]

यदि महाराजको हमारी प्रार्थना स्वीकार नहीं—तो हमें अपने जीवनका सबसे अप्रिय कार्य करना पड़ेगा।

राजा : [चौंककर] क्या…क्या…करेंगे आप ?

महामन्त्री : हम महाराजको समस्याओंसे उलझता हुआ छोड़कर चले जायेंगे।

राजा : चले जायेंगे ? कहाँ चले जायेंगे ?

महामन्त्री : कहीं भी। राजमहलके बाहर, शुतुरनगरीके बाहर।

राजा : आप सब ? आप सब चले जायेंगे।

विरोधीलाल : मुझे दुःख है महाराज—लेकिन मुझे वही करना पड़ेगा जो महामन्त्रीने कहा है।

राजा : और आप लोग ?

[आपणमन्त्री और रक्षामन्त्री सादर झुकते हैं]

आपणमन्त्री : मैं सुबोधीलालजीसे सहमत हूँ महाराज।

रक्षामन्त्री : और मैं आपणमन्त्रीसे।

राजा : और यदि हम शुतुरमुर्गको तोड़नेकी आज्ञा दे दें तो ?

महामन्त्री : तो हम यहीं रहेंगे सदैवकी भांति, यह सिंहासन और शुतुरराज्य आपका रहेगा, सदैवकी भांति।

राजा : आप वचन देते हैं।

महामन्त्री : शुतुरनगरीके सबसे बड़े सत्यवादीकी हैसियतसे जो कुछ कहूँगा, सच कहूँगा, पूरा सच कहूँगा। यदि महाराज, शुतुरमुर्ग तोड़नेकी आज्ञा दे दें तो हम वचन देते हैं कि शुतुरनगरीका राज्य और सिंहासन महाराजका रहेगा। सत्यमेव जयते।

सभी मन्त्री : [एक साथ] सत्यमेव जयते।

राजा : [मुसकराकर] इस वचनके आधारपर कि हमारा सिंहासन हमारे पास रहेगा, हम अपने योग्य मन्त्रियोंकी सलाहपर शुतुरमुर्ग तोड़नेकी आज्ञा देते हैं।

भाषणमन्त्री : [सोल्लास] महाराजकी—

सब मन्त्री : जय हो।

राजा : परन्तु सज्जनो, हम शुतुरमुर्ग तोड़नेका व्यय कैसे पूरा करेंगे। राजकोषका सारा धन तो उसे बनवानेमें लग गया। अब तो उसमें एक फूटी कौड़ी भी नहीं है।

महामन्त्री : हम सुरक्षित राजकोषका उपयोग कर सकते हैं।

राजा : परन्तु वह तो हमारी व्यक्तिगत सम्पत्ति है।

महामन्त्री : व्यक्तिगत सुरक्षाके लिए हमें व्यक्तिगत सम्पत्तिका उपयोग करना चाहिए।

राजा : परन्तु इसमें व्यय कितना आयेगा ?

विरोधीलाल : हम लोगोंने सब आँकड़े तैयार कर लिये हैं महाराज ! शुतुरमुर्ग बनवानेमें जितना धन लगा, तुड़वानेमें भी लगभग इतना ही लगेगा।

[राजा कुछ सोचनेके पश्चात् महामन्त्रीकी ओर बढ़ता है]

राजा : यह है सुरक्षित राजकोषकी ताली। परम सत्यवादी महा-मन्त्रीजी आपने जो वचन हमें दिया है, उसके उपलक्ष्यमें हमारी यह तुच्छ भेंट।

महामन्त्री : [ताली लेकर] आपके शुभ जन्मोत्सवपर स्वयं हमें कुछ भेंट करना चाहिए था महाराज। पर घटनाएँ कुछ इस तीव्रतासे घटीं। खैर, हम अभी भी कुछ-न-कुछ दे सकते हैं। अब हमें आज्ञा दीजिए महाराज ? शुतुरमुर्गके बनवाने-से कम कार्य तुड़वानेमें नहीं है। कार्यका सही नियोजन

हो सके इसलिए, कुछ क्षणोंके लिए हम सभीको जाना होगा। आइए सज्जनो।

[चारों मन्त्री अभिवादन करके बाहर जाते हैं, राजा मुसकराते हुए उन्हें जाता देखता है। तुरन्त पृष्ठभूमिसे भीड़का शोर उभरता है। राजाकी मुखमुद्रा बदल जाती है। वह चिन्तित हो उठता है]

[रानीका प्रवेश]

रानी : [घोषणा] महाराजकी जय हो।

राजा : [उसी ओर देखता हुआ] क्या समाचार है दासी ?

रानी : शुतुरनगरीके महाराजसे मामूलीरामजी मिलने आये हैं।

राजा : [साश्चर्य] महारानी आप ? दासी कहाँ है ?

रानी : वह तो राजमहलसे बाहर चली गयी।

राजा : और दासियाँ ? नौकर ? चाकर ? प्रहरी, द्वारपाल— अंगरक्षक ?

रानी : वे सब भी चले गये हैं ?

राजा : [क्रोधित] कहाँ चले गये हैं ? और क्यों चले गये हैं ?

रानी : यही प्रश्न तो मैं भी पूछना चाहती थी महाराज ? लेकिन किससे पूछूँ ? राजमहलमें आपको और मुझे छोड़कर अब कोई नहीं है।

राजा : कोई नहीं है, राजमहलमें अब कोई नहीं है। कहाँ चले गये ये सब ? कहाँ चले गये ?

रानी : [मुसकराकर] महाराज मैं जो हूँ आपके साथ। आप बिलकुल भयभीत न हों।

राजा : कौन कहता है कि हम भयभीत हैं। हम, शुतुरनगरीके महाराज किसीसे भयभीत नहीं। हमें…हमें…तो केवल प्रतीक्षा है।

रानी : प्रतीक्षा है ? किसकी ?

राजा : अपने योग्य मन्त्रियोंकी और उस वचनकी जो उन्होंने हमें दिया है।

रानी : कौन-सा वचन ?

राजा : [अचानक मुसकराकर] वही जो हमने महारानीको अपने विवाहपर दिया था। सदैव सदैव तुम्हारा रहनेका वचन।

रानी : महाराज, आज आपको क्या हो गया है ?

राजा : [अचानक] महारानी, आइए हम लोग प्यार करें।

रानी : [भयभीत] महाराज !

राजा : आह ! कितना मधुर है तुम्हारा संकेत। महारानी, ऐसा लगता है कि समय रुक गया है। सारा युग धड़कते हृदयसे हमारे मधुर मिलनकी प्रतीक्षा कर रहा है। मुझे बहुत अन्दरसे यह लग रहा है कि बहुत शीघ्र हम तुम्हारा आलिंगन करेंगे। हम यह सोच रहे हैं कि वह सब कितना सुखद होगा। आओ—हमारे निकट आओ—आओ—

[राजा स्वयं रानीकी ओर बढ़ता है]

रानी : महाराज—मुझे—मुझे भय लग रहा है।

राजा : भयभीत होनेकी कोई आवश्यकता नहीं। हम जो हैं तुम्हारे साथ। हम शुतुरनगरीके महाराज !

[रानी भयभीत-सी अन्दर चली जाती है, राजाका मधुर हास्य। दूसरी ओरसे मामूलीरामका प्रवेश—मामूलीराम-की मुद्राओंमें अब दृढ़ विश्वास है]

राजा : [चौंककर] तुम……।

मामूलीराम : हाँ महाराज……मैं।

[मामूलीराम चुपचाप राजाकी ओर बढ़ता है]

राजा : [भयभीत-सा सिंहासनकी ओर हटता हुआ] तुम··· तुम···अब क्या चाहते हो··· ?

[राजा सिंहासनपर बैठ जाता है]

मामूलीराम : [गम्भीरतासे] महाराज मैं आपसे कुछ कहने आया हूँ।

राजा : तुम····अब और क्या कहना चाहते हो ? हमने तुम्हारी माँग स्वीकार कर ली है। [मुसकराकर] हाँ, मामूलीराम, तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिए। हमने शुतुरमुर्ग़ तोड़नेकी आज्ञा दे दी है।

मामूलीराम : [आश्चर्य] परन्तु महाराज शुतुरमुर्ग़को तोड़नेका तो प्रश्न ही नहीं उठता। सोनेका शुतुरमुर्ग़ तो कभी बना ही नहीं।

राजा : मामूलीराम !

मामूलीराम : सारी शुतुरनगरी जानती है महाराज कि सोनेका शुतुरमुर्ग़ कभी नहीं बना।

राजा : [स्तम्भित] इतनी बड़ी दुर्घटना हमारे पूर्व ज्ञान और सहमतिके बिना हो गयी ? और हमें इसका पता भी न चला। [पीड़ासे] देशका सारा धन, सारी प्रतिभा, सारा वैभव हमने शुतुरमुर्ग़ बनवानेमें लगा दिया !

मामूलीराम : और जो शेष था उसे तुड़वानेमें—

राजा : परन्तु हमारे योग्य मन्त्री—।

मामूलीराम : आपके योग्य मन्त्रियोंने आपके साथ बहुत बड़ा छल किया है। महाराज, आपका सोनेका शुतुरमुर्ग़ सिर्फ़ काग़ज़पर बना होगा—और काग़ज़पर ही टूट गया। [कटुता] लेकिन असली शुतुरमुर्ग़ तो आप हैं, जो हमें खाकर और हमें पीकर अपने-आपको बनाते रहे।

राजा : यह समय हमारी आलोचना करनेका नहीं मामूलीराम। सोचना तो यह है कि देश-हितके लिए अब क्या होना चाहिए ? तुम—तुम—हमें भीड़के सामने ले चलो। हम सामूहिक रूपसे अपनी त्रुटियाँ स्वीकार करेंगे। यदि भीड़ हमारी शक्ति और हमारा सिंहासन देनेका वचन देगी, तो हम नये सिरेसे हर बातकी जाँच करेंगे। भ्रष्टाचारी मन्त्रियोंको हम कठोर दण्ड देंगे। हमें भीड़की शरणमें ले चलो मामूलीराम। हम वचन देते हैं—जैसा भीड़ कहेगी हम वैसा ही करेंगे।

मामूलीराम : [व्यंग्यसे] फिर आप हमारी माँगें पूरी कर देंगे ?

राजा : पूरी कर देंगे ?

मामूलीराम : [व्यंग्यसे] फिर सबको सब-कुछ मिलेगा।

राजा : हाँ मामूलीराम, सबको सब-कुछ मिलेगा—एक साथ मिलेगा—तुरन्त मिलेगा। [भयभीत] हम वचन देते हैं।
[मामूलीराम अविचल है]
[चीखकर] हम वचन देते हैं।

मामूलीराम : महाराज, या तो आप बहुत अच्छे अभिनेता हैं और या फिर महामूर्ख।

राजा : तो''''तो क्या, तुम्हें हमारे वचनपर विश्वास नहीं !

मामूलीराम : नहीं।

राजा : तो—तो तुम हमें भीड़के सामने नहीं ले चलोगे ?

मामूलीराम : भीड़के सामने आपको जाना ही होगा।

राजा : [प्रसन्न] मामूलीराम।

मामूलीराम : [कठोर] सामूहिक क्षमाके लिए नहीं सामूहिक दण्डके लिए। चलिए [मामूलीराम राजाकी ओर बढ़ता है। राजा सिंहासनके पीछे छुप जाता है। सभी कोनोंसे

'महाराजकी जय हो' के नारे लगते हैं। चारों मन्त्री सिंहासनके पास जाकर अभिवादन करते हैं।]

महामन्त्री : [उसके हाथमें रेशमी कपड़ेसे ढँका हुआ एक थाल है] महाराजकी जय हो! अपने शुभ जन्मोत्सवपर हम स्वामिभक्त मन्त्रियोंका यह तुच्छ उपहार स्वीकार करें।

[राजा मुसकराता हुआ सिंहासनके पीछेसे निकल आता है। और रेशमी कपड़ा हटाता है]

राजा : [थालसे रस्सी उठाकर भयभीत-सा] यह—यह—क्या है?

महामन्त्री : [नदैयकी भाँति गम्भीर ओजपूर्ण स्वर] नागपाश।

राजा : नागपाश? क्यों? किसके लिए?

महामन्त्री : यह आपके लिए है महाराज। आपकी मानसिक अवस्था देखकर हम यह तुच्छ उपहार लाये हैं। आपकी आज्ञा लेकर हम आपको इसी नागपाशसे बांध देंगे।

राजा : पर हम इसकी आज्ञा नहीं दे सकते।

महामन्त्री : तो हमें अपनी इच्छासे यह करना होगा। देश और आपके प्रति हमारी जिम्मेदारी है। आपके असभ्य व्यवहारसे आपकी प्रतिष्ठा गिर सकती है। राजाको सदैव राजाकी तरह व्यवहार करना होगा। इसलिए आपकी मानसिक अवस्था देखते हुए हम आपको बांधना चाहेंगे।

राजा : पर क्यों? हम तो स्वस्थ हैं। बिलकुल स्वस्थ।

महामन्त्री : हम आपको विश्वास दिलाते हैं महाराज कि आप स्वस्थ नहीं हैं। शुतुरमुर्ग टूटनेसे आपकी मानसिक दशा शोचनीय हो गयी है।

राजा : परन्तु शुतुरमुर्ग तो कभी बना ही नहीं; उसके टूटनेका प्रश्न ही नहीं उठता।

महामन्त्री : कौन कहता है कि शुतुरमुर्ग नहीं बना ?

राजा : मामूलीराम और भीड़। अब तुम लोग हमें और अधिक धोखेमें नहीं रख सकते। अब हमें सब-कुछ मालूम हो चुका है। इतना बड़ा षड्यन्त्र इतनी बड़ी धूर्तता। शुतुरमुर्ग बनवाने और उड़वानेके नामपर आप पूरा देश खा गये। हम तो मामूलीराम और भीड़के आभारी हैं कि सही सूचना हमें मिल गयी।

महामन्त्री : मामूलीरामके आभारी हम भी हैं कि उन्होंने सही सूचना आपको दी, हम कृतज्ञ हैं इसलिए महाराजके जन्मोत्सव-पर दिया जानेवाला उपहार अब इन्हें देंगे।

मामूलीराम : क्यों ? मैं न तो असत्य हूँ और न मूर्ख।

महामन्त्री : हम जानते हैं कि तुम बुद्धिमान् हो गये हो मामूलीराम— इसलिए अब तुम्हारा रस्सीसे बाँधा जाना बहुत आवश्यक है। [महामन्त्रीके संकेतपर रक्षामन्त्री, निर्माणमन्त्री, भाषणमन्त्री, मामूलीरामको बलात् पकड़कर [illegible] सिंहासनसे बाँध देते हैं]

महामन्त्री : [मामूलीरामसे सादर] मामूलीरामजी—आपने [illegible] सत्यका उद्घाटन करनेके उपलक्ष्यमें हमारा अभिनन्दन स्वीकार करें। [महामन्त्री मामूलीरामको सादर तमाचा मारता है, फिर झुककर अभिवादन करता है]

राजा : परमसत्यवादी महामन्त्री जी, सारा जीवन आप भी [illegible] सत्य बोलते रहे—और हम छले गये। आज [illegible] दण्ड सोचा है आपने ?

महामन्त्री : आजीवन कारावास—इस सिंहासनपर बैठकर।

राजा : सिंहासनपर बैठकर ! चुप ! महामन्त्री ! [illegible] आदमी इस सिंहासनपर बैठेंगे ?

महामन्त्री : हाँ, मैं, परम सत्यवादी महामन्त्री—इस सिंहासनपर बैठूँगा क्योंकि सत्य बोलना मेरे जीवनका धर्म नहीं मेरी कूटनीतिका अंग है। जब मैं सत्य बोलता था तो आप आतंकित होते थे और मुझे अधिक स्वर्णमुद्राएँ देते थे।

राजा : तो—तो यह तुम्हारा नक़ली चेहरा था। अब हम तुम्हारे असली चेहरे पहचान सकते हैं। [चीखकर] तुम सबके। तुम सब पापी हो—झूठे हो—नीच हो, सारा देश तुम्हें पहचान ले, इसलिए हम तुम्हें आज्ञा देते हैं कि तुम महादुष्टोंका मुखौटा पहनकर हमारे सामने आओ [चीखकर] जाओ।

महामन्त्री : हमें कहीं जानेकी आवश्यकता नहीं है महाराज। हम जानते थे कि एक क्षण ऐसा आयेगा कि जब आप हमारे असली मुखौटे देखना चाहेंगे। हम इस अवसरके लिए तैयार होकर आये हैं। ताकि आपकी अन्तिम इच्छा पूरी हो सके।

राजा : अन्तिम इच्छा ? क्या···क्या···तुम हमारी हत्या करोगे ?

महामन्त्री : नहीं महाराज। रक्तपातसे हमें घृणा है। हमने तो यह सुना था कि महान् व्यक्तियोंका जन्म और मृत्यु एक ही दिन होता है। सज्जनो, महाराजको कृतार्थ कीजिए।
[चारों मन्त्री एक कोनेमें जाकर भयंकर आकृतियोंवाले मुखौटे पहनते हैं। फिर महाराजको एक साथ झुककर अभिवादन करते हैं]

राजा : [विक्षिप्तताका आभास] हाँ···अब ठीक है। इन भयंकर मुखौटोंमें तुम लोग कितने सुन्दर लग रहे हो। वाह ! ऐसा लगता है कि कुरूप सत्य चार भागोंमें विभाजित होकर हमारे सामने खड़ा है।

राजा उन्हें देखकर पागलोंकी तरह अट्टहास करता है। महामन्त्रीके संकेतपर मुखौटाधारी हाथ फैलाकर राजाकी ओर बढ़ते हैं]

राजा : [भयभीत] यह मुझ तो बहुत गन्दी है। तुम लोग वहीं खड़े रहो। चलने-फिरनेसे तुम्हारी भयंकरता और दुष्टता बहुत घिनौनी लगती है। हम आज्ञा देते हैं कि वहीं रुक जाओ। रुक जाओ वहीं—अब हमें तुम्हारी आकृतियोंसे भय लग रहा है।

[राजा दोनों हाथोंसे अपनी आँख बन्द कर लेता है। मुखौटाधारी बराबर उसकी ओर बढ़ते हैं। वह इधर-उधर भागता है! वे वहीं जाते हैं। फिर राजा यवनिका-की ओर भागता है।]

राजा : [ऊँचा स्वर] समझ गया···समझ गया···तुम लोग हमें निर्वासित करना चाहते हो। हमें निकालना चाहते हो। लेकिन अपने दिलोंसे हमें कैसे निकाल पाओगे? हम तुम्हें वरदान देते हैं कि तुम सब हमारे वंशज बनो। हमारी महान् परम्पराको आगे बढ़ाओ और परमगल्पके प्रतीक शुतुरमुर्गकी स्थापना करो।

[महामन्त्रीके संकेतपर मुखौटाधारी राजाको भगा देते हैं। राजा एक आर्तनादके साथ मुख्य यवनिकाके सामने आ जाता है। यवनिका बन्द हो जाती है। राजा भयानक मुस्कराते हुए दर्शकोंकी ओर मुड़ता है]

दर्शन था न स्वभाव और न धर्म। वह तो शक्ति और सत्ता सुरक्षित रखनेकी एक नीति थी। किसी-न-किसी बहानेसे हम उन्हें अधिकसे-अधिक स्वर्ण-मुद्राओंका दान देते रहे ताकि वे अपने भोग-विलासमें अधिकसे अधिक व्यस्त रहें और हमारा सिंहासन सुरक्षित रहे। अब तो आप समझ गये होंगे कि हम एक राजा हैं और इस अनन्त नाटकके शाश्वत सूत्रधार। हाँ अब मेरा 'हम' हम नहीं रहा, सूत्रधार हो गया हूं न, इसलिए अब 'मैं' केवल 'मैं' हूं। स्वागत और नमस्कार !

[सूत्रधार अभिवादन करता है। रंगमंचपर अन्धकार हो जाता है]



राजा उन्हें देखकर पागलोंकी तरह अट्टहास करता है। महामन्त्रीके संकेतपर मुखौटाधारी हाथ फैलाकर राजाकी ओर बढ़ते हैं]

राजा : [भयभीत] यह मुद्रा तो बहुत गन्दी है। तुम लोग वहीं खड़े रहो। चलने-फिरनेसे तुम्हारी भयंकरता और दुष्टता बहुत घिनौनी लगती है। हम आज्ञा देते हैं कि वहीं रुक जाओ। रुक जाओ यहीं—अब हमें तुम्हारी आकृतियोंसे भय लग रहा है।

[राजा दोनों हाथोंसे अपनी आँख बन्द कर लेता है। मुखौटाधारी बराबर उसकी ओर बढ़ते हैं। वह इधर-उधर भागता है! वे वहीं जाते हैं। फिर राजा यवनिका-की ओर भागता है।]

राजा : [ऊँचा स्वर] समझ गया…समझ गया…तुम लोग हमें निर्वासित करना चाहते हो। हमें निकालना चाहते हो। लेकिन अपने दिलोंसे हमें कैसे निकाल पाओगे ? हम तुम्हें वरदान देते हैं कि तुम सब हमारे वंशज बनो। हमारी महान् परम्पराको आगे बढ़ाओ और परमसत्यके प्रतीक शुतुरमुर्ग़की स्थापना करो।

[महामन्त्रीके संकेतपर मुखौटाधारी राजाको धक्का देते हैं। राजा एक आर्तनादके साथ मुख्य यवनिकाके सामने आ जाता है। यवनिका बन्द हो जाती है। राजा अचानक मुसकराते हुए दर्शकोंकी ओर मुड़ता है]

राजा : [दर्शकोंसे] यह तो हमें सदैव मालूम रहा कि शुतुरमुर्ग़ कभी नहीं बना और कभी नहीं टूटा। सोनेका शुतुरमुर्ग़ तो हम इसलिए बनवा रहे थे क्योंकि सचेतन शुतुरमुर्ग़ हम स्वयं थे। शुतुरमुर्ग़की स्थापना, न तो हमारा

दर्शन था न स्वभाव और न धर्म। वह तो शक्ति और सत्ता सुरक्षित रखनेकी एक नीति थी। किसी-न-किसी बहानेसे हम उन्हें अधिकसे-अधिक स्वर्ण-मुद्राओंका दान देते रहे ताकि वे अपने भोग-विलासमें अधिकसे अधिक व्यस्त रहें और हमारा सिंहासन सुरक्षित रहे। अब तो आप समझ गये होंगे कि हम एक राजा हैं और इस अनन्त नाटकके शाश्वत सूत्रधार। हाँ अब मेरा 'हम' हम नहीं रहा, सूत्रधार हो गया हूँ न, इसलिए अब 'मैं' केवल 'मैं' हूँ। स्वागत और नमस्कार!

[सूत्रधार अभिवादन करता है। रंगमंचपर अन्धकार हो जाता है]

